चन्दामामा
अप्रैल १९९४
RS 4

ऐसा भी होता है!

शाम का वक्त था. सोनू स्कूल से घर लौट रहा था. अचानक तेज हवा चलने लगी...
और एक उड़न-तश्तरी आसमान से उतरी और ठीक सोनू के पास आकर रुक गई...

SYNDICATE BANK
501/-
SPECIMEN

SB
FAITHFUL FRIENDLY

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

शिक्षा सभी को

पिछले दिसंबर में नौ देशों का एक शिखर सम्मेलन शिक्षा संबंधी समस्याओं पर चर्चा करने के लिए संपन्न हुआ। इस सम्मेलन ने दीर्घ चर्चाओं के उपरांत कुछ सिफ़ारिशें प्रस्तुत कीं। इन सिफ़ारिशों पर सविस्तार चर्चा करने के लिए राज्यों के मुख्य मंत्रियों की बैठक दिल्ली में हुई।

संसार के विख्यात नौ देशों के शिखर सम्मेलन का आयोजन भारत ने किया। वे देश हैं:– बंगलादेश, ब्राज़िल, चीन, ईजप्ट, इन्डोनेशिया, मेक्सिको, नैजेरिया, पाकिस्तान, भारत। सम्मेलन का मुख्य विषय है 'शिक्षा सभी को' और यह शिक्षा इस शताब्दी के अंत तक उक्त नौ देशों के हर बालक-बालिका को किस प्रकार दी जाए?

इस अनूठे लक्ष्य की पूर्ति के लिए सबों ने अपनी सम्मति दी। निर्णय लिया गया कि सर्वाधिक प्रधानता मानव के विकास को दी जाए। प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने के लिए हर देश अपना भाग अधिकाधिक दे और यह पृथक रखा जाए, जिससे बच्चों की शिक्षा के लिए ही इसका व्यय हो। यह बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने में नितांत उपयोगी सिद्ध होगा।

गंभीर समस्या थी तो धन की। और इतना धन कहाँ से आये? नौ राष्ट्रों के सभी सदस्यों ने महसूस किया कि शिक्षा को व्याप्त करने के लिए अपनी प्रजा पर और करें लगाना अनुचित होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि इस धन के लिए बाहर की शक्तियों पर उन्हें आधारित होना पड़ेगा। मुख्यतया 'वरल्ड बांक' तथा 'इंटरनेशनल मोनटरी फंड' जैसी वित्तीय संस्थाएँ ही इस दिशा में इन देशों की सहायता पहुँचा सकती हैं। इन संस्थाओं ने कुछ शर्तें रखी हैं। उनकी एक शर्त यह है कि ये देश अपनी तरफ़ से साधन व धन जुटावें और यह सीमित व निर्धारित हो। इस शिखर सम्मेलन ने इन संस्थाओं से निवेदन किया कि वे अपने इन शर्तों को सुगम व ढ़ीला करें, नरमी लायें।

जहाँ तक भारत का प्रश्न है, शिक्षा का भविष्य मुख्य मंत्रियों के निर्णय पर निर्भर है। उनको यह भी सोचना होगा कि पाठशालाएँ किस प्रकार विद्यार्थियों को आकर्षित कर सकती हैं और उन्हें सबेरे से लेकर शाम तक कैसे बिठा रख सकती हैं। प्रारंभिक शिक्षा पर करोड़ों रुपयों के व्यय के बाद भी इस दिशा में भी सोचना आवश्यक है।

वर्ष : ४७ | अप्रैल १९९४ | अंक : ८

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

समाचार—विशेषताएँ
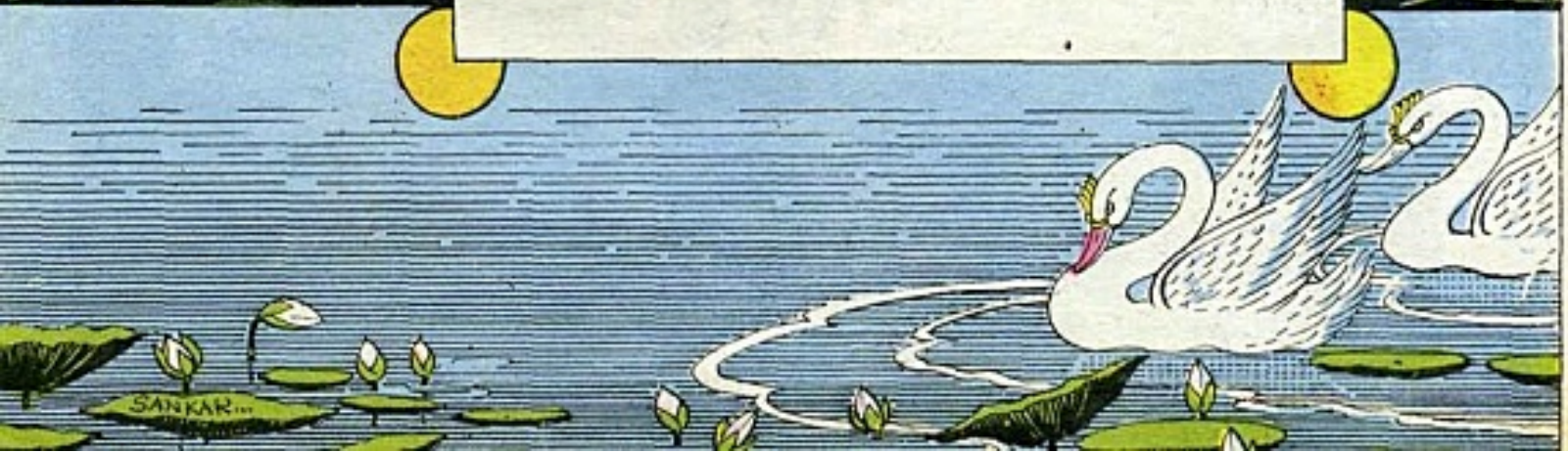
सिंगापूर का स्नेह व सहयोग

बाग-बगीचों तथा पार्कों के बारे में हम सब लोग जानते हैं। शाम होते ही बच्चे और बूढ़े सब वहाँ आराम से अपना समय काटते हैं। परंतु विशेषता तो यह है कि "टेक्नलाजिकल इन्फरमेशन पार्क" के नाम से कर्नाटक प्रांत की राजधानी बेंगलोर के निकट ही एक केंद्र खोला गया है। यह केंद्र अत्यंत आधुनिक औद्योगिक केंद्र होगा। इस पार्क की नींव पिछले जनवरी २८ को बेंगलोर से अठारह किलों की दूरी पर स्थित 'वैटफील्ड' नामक एक जगह पर रखी गयी। आप अनुमान लगा सकते हैं कि ऐसे पार्क से विद्यार्थियों को कितना आनंद होता होगा। इस आयोजन का प्रारंभोत्सव किया सिंगापूर के प्रधान मंत्री गो चोक टॉग ने।

इस 'पार्क' के बारे में जानने के पहले उस सिंगापूर के बारे में जानना नितांत आवश्यक है, जिसके साथ हमारे बड़े ही स्नेहपूर्वक संबंध हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व (१९३९-१९४५) बहुत-से भारतीय अपनी जीविका के लिए फेटरेटेड मल स्टेट्स (एफ. एम. एस.) कहलाये जानेवाले सिंगापूर, मलया आदि प्रांतों में जाते थे और वहीं बस भी गये थे।

मद्रास या तूत्तुकुड़ी के बंदरगाह में टिकट खरीदकर स्टीमरों में वहाँ ये लोग जाया करते थे। उन दिनों में 'पासपोर्ट' या 'वीसा' की कोई आवश्यकता नहीं होती थी। इस प्रकार सिंगापूर बहुत-से भारतीयों का निवास-स्थल बन गया।

वहाँ के चीन तथा मलया के निवासियों से हमारे देशवासी मिलजुलकर रहते थे। इनके पारस्परिक संबंध भी बहुत ही अच्छे थे।

दक्षिणी चीन के सुमद्री मुखद्वार पर है सिंगापूर। इस द्वीप को सिंहपुरा भी कहते हैं। मलेया भाषा में इसे 'टेमासेक' (समुद्री नगर) कहते थे। विटिश नाविक सर स्टाम्फोर्ड राफिल्स १८१९ में जब वहाँ पहुँचा तब वह केवल मछुआरों की बस्ती मात्र थी। वहाँ के अधिकारियों से उसने एक समझौता कर लिया। उसे एक व्यापार केंद्र के रूप में परिवर्तित करने

की अनुमति ईस्ट इंडिया कंपनी ने पायी । और यह सिंगापूर की वृद्धि की पहली सीढ़ी बनी ।

१८५८ में ब्रिटिश के हाथों में शासन की बागड़ोर आ गयी । इसके बाद यहाँ की संपत्तियों में भी वृद्धि हुई । 'स्ट्रैट सेटिलमेंट्रस'' अधिकार केंद्र बना । ब्रिटिश की सेना का यह केंद्रबिंदु बना । एशिया के प्रधान बंदरगाह के रूप में यह परिवर्तित हुआ ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान थोड़े समय तक यह जापान के अधीन रहा । लेकिन मित्र पक्षों ने फ़िर से इसे अपने कब्जे में लिया । वह जब जापान के अधीन था, तब सुभाष चंद्र बोस ने यहाँ जापान की सहायता से ''आज़ाद हिन्द फौज़' की स्थापना की, जिसका लक्ष्य भारत को अंग्रेज़ों से मुक्ति दिलानी थी, उसे स्वतंत्र बनाना था । युद्ध की समाप्ति के बाद वहाँ के लोगों ने स्वतंत्र होना चाहा, अपने लिये आज़ादी माँगी ।

१९५९ में इस द्वीप को स्वयं शासन संभालने का अधिकार प्राप्त हुआ । ली कुवान यू प्रधान मंत्री बने । उसके बाद वे उस देश के अध्यक्ष बने । उनके नेतृत्व में आर्थिक क्षेत्र में सिंगापूर की प्रयप्ति अभिवृद्धि हुई । आर्थिक क्षेत्र में विकसित देशों में यह भी माना जाने लगा । १९९० में गो चो टॉंग सिंगापूर के प्रधान मंत्री बने ।

१९९२ में इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में एशिया के देशों का एक सम्मेलन हुआ । उस समय हमारे देश के प्रधान मंत्री श्री पी. वी. नरसिंहराव तथा सिंगापूर के प्रधान मंत्री गो चो टॉंग के बीच 'इन्फरमेशन टेक्नलाजिकल बिज़नेस पार्क' को स्थापित करने का निर्णय हुआ । उस निर्णय के अनुसार ही कर्नाटक औद्योगिक अभिवृद्धि संस्था तथा टाटा औद्योगिक संस्था ने इस औद्योगिक केंद्र को रूप दिया ।

पाँच सौ करोड़ के मूल्य की चौबीस हेक्टर की भूमि कनटिक सरकार ने मुफ़्त में दी । इस ''इन्फरमेशन पार्क' में उद्योगों के बारे में अनुसंधान होगा । विकास, प्रशिक्षण, व्यापार, निवास, मनोरंजन आदि सब का प्रबंध यहाँ हो, ऐसे प्रयत्न किये जा रहे हैं । लधु उद्योग, कम्प्यूटर साफ्टवेर संबंधी अनुसंधान और अभिवृद्धि के लिए यहाँ प्रधानता दी जा रही है । एलक्ट्रानिक इंजनीयरों, कम्प्यूटरों तथा टेलि कम्यूनिकेशन्स में शिक्षित २०,००० तकनीकी निपुणों को यहाँ नौकरियाँ मिलने की संभावना है ।

हम अशा करते हैं कि इस आयोजन से नौकरियों की खोज में स्वदेश छोड़कर विदेश जानेवाले बुद्धिजीवियों का जाना भविष्य में रुक जायेगा ।

संसार-सागर

शृंगवर गाँव एक बहुत ही बड़ी नदी के किनारे है । नरेंद्र उसी गाँव का निवासी है । वह कमाल का तैराक है । उसकी तीव्र इच्छा है कि मुक्तकंठ से सब यहीं कहें कि उसकी बराबरी का कोई तैराक ही नहीं ।

चंपा उसी गाँव की रहनेवाली है । धनी परिवार में उसका जन्म हुआ है । उसके माँ-बाप दिवंगत हो चुके हैं ।अब उसका मामा ही उसके घर पर रहता है, उसकी देखभाल का नाटक करता है और उससे पैसे ऐंठता रहता है । अपने मनोरंजन के लिए व्यर्थ का खर्च करता रहता है । मामा का एकलौता बेटा है सुधीर । चंपा से विवाह करने की उसकी तीव्र इच्छा है । परंतु सब प्रकार से चंपा के लिए वह योग्य वर है ही नहीं ।

चंपा मामा और मामी के स्वभाव से भली भाँति परिचित है । उसकी तो कभी-कभी इच्छा होती है कि उन्हें घर से बाहर निकाल दूँ । लेकिन जब याद आता है कि मामा उसके बारहवें साल ही में ही इस घर में आये हैं और यहीं रह रहे हैं तो चुप हो जाती है । अलावा इसके, सारा गाँव विश्वास करता है कि मामा ने इस घर में आकर चंपा की बहुत सहायता की है और घर की बहुत-सी समस्याओं को सुलझाया भी है । वे कहते कि इस अनाथ बच्ची की रक्षा के लिए ही मामा ने अपनी पूरी संपत्ति सस्ते में बेच दी और यहाँ आकर रह रहा है ।

अब चंपा अठारह वर्ष की है ।उसे मालूम है कि मामा को घर से निकाल देने से उसकी बदनामी होगी ।इसलिए उसने एक उपाय सोचा । उसने सोचा कि मैं एक अच्छे और योग्य व्यक्ति से विवाह करूँ, जो मामा से दोस्ती का नाटक करेगा और उसको बुरे रास्ते से हटाकर अच्छे रास्ते पर ला खड़ा

नरसिंहा

क़रेगा ।

चंपा, नरेंद्र को बचपन से जानती है । उसका दृढ़ विश्वास है कि उसमें उसे मामा से बचाने की समर्थता है, योग्यता है । वह एक दिन एकांत में उससे मिली और उसे अपना पूरा हाल सुनाया । उसने उससे प्रार्थना की कि वह उससे शादी करे ।

नरेंद्र को अवश्य ही चंपा से प्रेम है, पर उसे इस बात का ड़र है कि शादी हो जाए तो कमाल का तैराक कहलाने की उसकी इच्छा अधूरी ही रह जायेगी । शायद यह इच्छा इच्छा मात्र बनकर रह जायेगी ।उसने अपने गुरू परमानंद को पूरा विषय बताया और उसकी सलाह पूछी ।

गुरू ने शिष्य की भरपूर प्रशंसा की और कहा "तुम तैरने की कला में प्रवीण हो । तुम चाहते हो कि मैं कमाल का तैराक बनूँ । चंपा ने भी मुझसे एक बार कहा था कि शादी करूँगी तो कमाल के तैराक से ही शादी करूँगी । इसलिए अच्छा तो यही होगा कि तुम असमान तैराक बनो और फिर शादी करो । अगर ऐसा नहीं हुआ तो जीवन में तुम दोनों को असंतृप्ति होगी । इसलिए तुम रूपवर जाओ ।

वहाँ जाकर गणेश से मिलो । उससे कहना कि तुम्हें मैंने भेजा है । वह तैरने की कला की कुछ और बारीकियाँ तुम्हें सिखा देगा । इस कला में प्रवीण हो जाने के बाद लौटकर चंपा से शादी कर लेना ।"

गुरु के कहे अनुसार नरेंद्र रूपवर गया । उस समय गणेश घर पर नहीं था । उसके पिता बीमार थे, इसलिए वैद्यसे मिलने पड़ोस के गाँव में गया हुआ था । यह जानकर उसने बूढ़ी से कहा "मुझे उनसे शीघ्र ही मिलना है । बता सकते हैं, वे कब आयेंगे?"

"लौटने की जल्दी तुमसे भी ज़्यादा उसको है । कल मेरी पोती को देखने दुलहेवाले आनेवाले हैं ।" बूढ़ी ने कहा ।

नरेंद्र को जब मालूम हुआ कि वह बूढ़ी गणेश की माँ है, तो उसने कहा "घर का बड़ा आदमी बीमार है और आपकी पोती को देखने कोई आ रहे हैं, यह कुछ अटपटा सा नहीं लगता? आपको ऐसा कार्यक्रम ऐसे समय पर रखना नहीं चाहिये था ।"

"तुमने ठीक ही कहा है । परंतु ज़रा

सोचो तो सही । जिस घर में दस से अधिक सदस्य हों, वहाँ कोई ना कोई तो अस्वस्थ तो होगा ही । अस्वस्थ आज पड़ जाते है तो कल स्वस्थ हो जाएँगे । इसके लिए मंगलय कार्य थोड़े ही रोके जा सकते हैं?"

नरेंद्र बाहर आनेवाला ही था कि एक आदमी अंदर आया, जो पहलवान लग रहा था । उसने नरेंद्र से कहा "मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा है ।यह तो ज़रूर बता सकता हूँ कि तुम गणेश के रिश्तेदार नहीं हो ।"

नरेंद्र ने आश्चर्य से पूछा "तुम्हें कैसे मालूम?" "उसके सब रिश्तेदार दुबले-पतले हैं । तुम जैसे बलवान उनके रिश्तेदारों में कोई नहीं है । क्या उसने तुमसे कर्ज़ लिया है?" पहलवान ने पूछा ।

नरेंद्र मन ही मन ही सोच रहा था कि बताऊँ कि नहीं कि किस काम पर आया हूँ । पहलवान ने कहा "लगता है, तुम्हें सब कुछ नया-नया लग रहा है । मेरी बात ध्यान से सुनो । तुमने जो कर्ज़ दिया है, वह तो वापस मिलेगा ही नहीं । उससे अपना हाथ धो ड़ालो ।" कहता हुआ वह चला गया ।

उसकी बातों को सुनकर नरेंद्र को लगा कि गाँव में गणेश का अच्छा नाम नहीं है । फिर भी सत्य जानने के लिए और दूसरों से पूछकर विवरण प्राप्त करने बस्ती में गया और लोगों से गणेश के बारे में जानकारी प्राप्त की । दुकानदार ने बताया कि उसे गणेश से बड़ी रक़म मिलनी है । दूधवाले ने कहा कि गणेश दूध तो खरीदता है, पर पैसे नहीं देता । धोबी ने भी ऐसी ही शिकायत की । ग्रामाधिकारी ने बताया कि गणेश बहुत झूठ बोलता है । नरेंद्र इसपर लज्जित होने लगा कि ऐसे इन्सान को मैंने अपना गुरु चुना है ।फिर भी उसने निर्णय किया कि परमानंद के कहे मुताबिक अवश्य ही गणेश से मिलूँगा ।
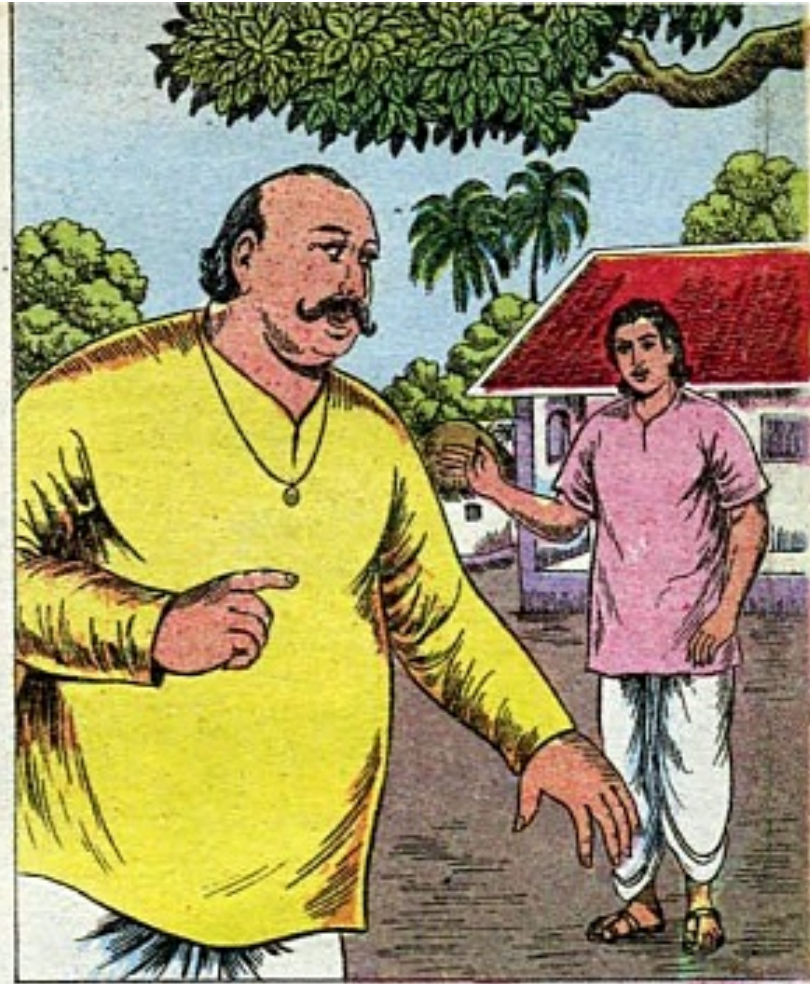
नरेंद्र इन्ही के बारे में सोचते हुए गाँव के बाहर के तालाब के पास गया । उसने देखा कि दूर से दो आदमी उसी की तरफ़ बढ़े चले आ रहे हैं । जब वे नरेंद्र के पास आये, तो उनमें से एक आदमी ने उससे कहा "महाशय, थोड़ी दूरी पर हमारी गाड़ी खराब हो गयी है । उसमें चिकित्सा से संबंधित पेड़ की एक बड़ी शाखा है । आप पेड़ की

उस शाखा को मेरे घर तक पहुँचा पायेंगे तो बड़ी कृपा होगी । वह मेरे पिताजी के रोग के लिए संजीविनी जैसा है ।"

नरेंद्र ने समझ लिया कि यही गणेश हैं । वह गाड़ी के पास आया और उस टहनी को उठाया तो उसके आश्चर्य की सीमा ना रही ।क्योंकि उस टहनी का कुछ वज़न ही नहीं था । बिल्कुल ही हल्की थी । जब सब मिलकर गाँव से गुज़र रहे थे तो धोबी सामने से आया । नरेंद्र ने सोचा कि अब इन दोनों में बहुत बड़ा झगड़ा हो जायेगा ।

उसको देखकर गणेश ने कहा "याद रखो कि लड़की को देखने कल लोग आनेवाले हैं ।"

धोबी ने विनय से सिर हिलाया और कहा "माँजी ने बताया है । कल तो अपने सारे काम छोड़ दूँगा और आप ही के घर में रह जाऊँगा ।"

बाद वे किराना दुकान से होते हुए जाने लगे तो दूकानदार ने ही गणेश से कुशल-मंगल पूछा और कहा "सुना है, कल बिटिया को देखने दुल्हेवाले आयेंगे । सामान अपने आदमी के ज़रिये भिजवाऊँ या आप ही ख़बर भेजेंगे?"

इसपर गणेश हँस पड़ा और बोला "घर जाकर घरवाली से बिना पूछे भला क्या बताऊँ, कैसे बता पाऊँगा? सामान भेजने की बात बाद रही, मुँह मीठा करने अवश्य आ जाना ।"

थोड़ी दूर और जाने के बाद सामने से आता हुआ ग्रामाधिकारी मिला और बोला "सुना है, कल बेटी को देखने लोग आ रहे हैं । तुम तो बिल्कुल भोले-भाले हो । व्यावहारिक ज्ञान तुममें है ही नहीं । कहते हैं, हज़ार झूठ बोलकर ही सही, एक शादी कराओ । झिझके बिना, ज़रुरत पड़े तो चार-पाँच झूठ बोल दो । दुल्हेवाले जो भी पूछेंगे, सब कुछ मान लो । तुम्हारे हाँ में हाँ भरने, साथ देने, सहायता पहुँचाने हम जो लोग मौजूद हैं । आखिर हम हैं किस काम के ?"

नरेंद्र को यह सब अजीब लग रहा था । अब तक तो वह यही समझ रहा था कि कोई भी गाँववाला उसे नहीं चाहता । अब उसे ज्ञात हो गया कि उसका यह विचार ग़लत है । इसीलिए परमानंद ने भी उसे यहाँ भेजा होगा । सोचते-सोचते वे घर के

पास पहुँचे । वहाँ पहलवान मिला और बोला "बेटी देखने लोग आ रहे हैं और तुमने तो मुझसे यह कहा ही नहीं है । शायद पुराने कर्ज़ को लेकर मुझसे कहने तुम शरमा रहे हो, झिझक रहे हो । ऐसे समय में काम नहीं आयें तो कब काम आयेंगे । पैसों की आवश्यकता है तो नित्संकोच पूछो ।"

घर में प्रवेश करके टहनी एक जगह पर रख दी गयी । तब गणेश ने नरेंद्र से कहा "आप बहुत ही आदरणीय व्यक्ति हैं । पूछते ही बिना कुछ कहे, आपने मेरी मदद की है । लगता है आप परदेशी हैं । इस रात को यहीं ठहरिये और मेरा आतिथ्य स्वीकार करके मुझे कृतार्थ कीजिये ।"

नरेंद्र ने तब गणेश से बताया कि परमानंद ने मुझे भेजा है और आप ही से मिलने आया हूँ । लेकिन गणेश को याद नहीं आया कि वह परमानंद कौन है?

दूसरे दिन गणेश की पुत्री को देखने के लिए दुल्हेवाले आये और यह उत्सव विवाह के स्तर पर संपन्न हुआ । अड़ोस पड़ोसवालों ने पूरी मदद पहुँचायी । गाँव के सब प्रमुख लोग आये । गणेश ने सबका समान रूप से स्वागत किया ।

दुल्हेवालों को लड़की अच्छी लगी । उन्होने अधिक दहेज ही मांगा, पर गणेश ने अपनी स्वीकृति दी ।

जब सब पूरा हुआ तो गणेश की माँ ने क्षुब्ध स्वर में उससे कहा "अकेले हो, तुमसे यह सब कैसे हो पायेगा? बहन की शादी

पर जो कर्ज़ा लिया, अब भी चुकाना बाकी है । अब उनकी सब मांगों को मानोगे तो बेटी की शादी कैसे कर पाओगे? बेचना भी चाहो तो हमारे पास खोटा सोना ही है, खरा सोना है ही नहीं"

गणेश माँ की बातों से बिल्कुल विचलित नहीं हुआ । उसने कहा "तकलीफ़ें और रुकावटें तो हमेशा होंगीं ही । संतुष्ट रहो कि पोती का विवाह निश्चित हुआ है । शेष सब कुछ मैं संभाल लूँगा ।"

दूसरे दिन गणेश जब अकेला था, नरेंद्र ने कहा "महाशय, आपके सम्मुख आपकी जो प्रशंसा करते हैं, उनका आप विश्वास कर रहे हैं और धैर्य से रह रहे हैं । आपको मालूम नहीं कि आपके पीछे वे आपके बारे

में क्या-क्या बोल रहे हैं ।" फिर उसने वह सब कुछ उससे बताया, जो सुना और देखा ।

सब सुनकर गणेश हँसा और बोला "मैं सब कुछ जानता हूँ । मेरे पास धन नहीं है । दूसरों पर आधारित हूँ । अगर वे मुझे दोषी ठहरायें या गालियाँ दें, तो इसमें उनकी क्या ग़लती?"

"अगर ऐसी बात हो तो सामने ही वे आपको गाली दे सकते हैं । पीठ पीछे निंदा करने से क्या फ़ायदा? सहायता भी पहुँचा रहे हैं और निंदा भी कर रहे हैं ।" नरेंद्र ने कहा ।

"मेरी अच्छाई ही इसका कारण है । ज़रूरत ना पड़े तो मैं कोई कभी किसी की सहायता नहीं माँगता । मुझमें कोई बुरी आदत नहीं है । मैं पीछे भी किसी की निंदा नहीं करता । कोई मेरी निंदा करे भी तो मैं अनसुनी कर देता हूँ" गणेश ने शांति से कहा ।

"आपकी जीवन-पद्धति बड़ी ही विचित्र है । विशेष बात तो यह है कि इतनी गंभीर समस्याओं के बीच में भी आप तैरने में प्रवीण हैं, उत्तम तैराक हैं । मैं आपके यहाँ तैरने की बारीकियों को जानने के लिए ही आया हूँ ।" नरेंद्र ने कहा ।

इसपर गणेश ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "बचपन से मेरा जीवन इस संसार-सागर में तैरने में ही गुज़रता रहा । पानी में तैरने की शिक्षा पा नहीं सका ।"

इस उत्तर से नरेंद्र की समझ में आ गया कि परमानंद का, उसे यहाँ भेजने का उद्देश्य क्या है? संसार एक समुद्र है । जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य हर क्षण डुबो देने की कोशिश में लगे रहते हैं । उनसे बचते हुए ज्वार-भाटे का सामना करते हुए, जल-प्रवाह में प्रवाहित हुए विना अपने को संभालते हुए, जो नदी के तट पर पहुँच पाता है, वही कमाल का तैराक है । वही इस संसार-सागर में तैरकर अपने को पार लगाने की शक्ति रखता है ।

नरेंद्र ने गणेश से बिदा लिया और अपने गाँव पहुँचा । चंपा से उसने शादी कर ली और बड़ी सक्षमता से सब समस्याओं का परिष्कार किया । संसार-सागर में कमाल का तैराक कहलाया गया ।
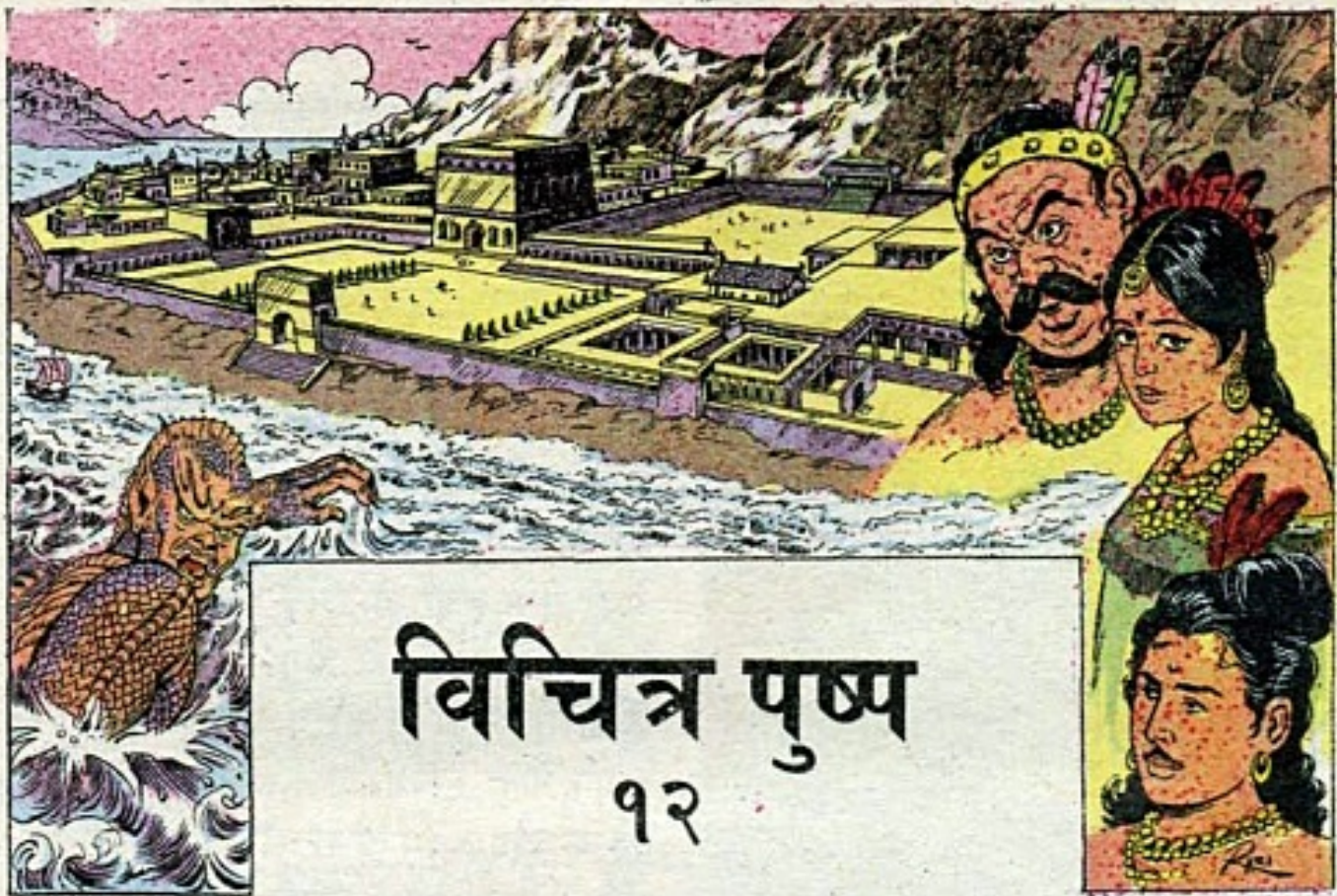
विचित्र पुष्प
१२

(नागपुरि राजभवन से जो 'शताब्दिका' पुष्प गुम हो गये थे, वे समुही तट पर एक नाव में पाये गये । दलनायक नागसिंह और चंद सैनिकों के साथ उत्तुँग 'शताब्दिका' पुष्प लिये राक्षस जंतु की खोज में निकल पड़ा । थोड़ी दूर जाने के बाद नागसिंह ने उत्तुँग को समुद्र में ढ़केल दिया और 'शताब्दिका' पुष्पों को अपने हस्तगत किया । उत्तुँग नाव में बैठकर किनारे की ओर बढ़ा । -बाद)

उत्तुँग के गये एक सप्ताह बीत गया, फिर भी उसके बारे में कोई विवरण ना जानने के कारण उसकी बहन रजनी और राजकुमारी प्रियंवदा बहुत ही चिंतित होने लगे । राक्षस जंतु के आक्रमण के कारण अपने-अपने घर, गाँव और संपत्ति छोड़कर जो स्त्री-पुरुष भाग आये और शरणार्थी की तरह रहने लगे, उनकी देखभाल का भार स्वयं राजकुमारी ने अपने कंधों पर लिया । उनके भोजन तथा रहने का प्रबंध उसी के पर्यवेक्षण में होने लगा । रजनी उसी के साथ रहने लगी और एक सप्ताह तक उसी किसी प्रकार का कष्ट महसूस नहीं हुआ । परंतु अब वह इस बात पर व्यथित होने ल । कि भैय्या अब तक क्यों नहीं लौटे? उ के बारे में कुछ भी क्यों मालूम नहीं हो पा ? बचपन से भैय्या से वह कभी अलग नहीं रही, इसलिए उसका क्लेश दिन ब दिन

बढ़ता गया । अपने ही भाई के बारे में सोचती हुई सोयी रजनी ने भैय्या कहकर ज़ोर से चिल्लाया और उठ बैठी ।

उसकी चिल्लाहट को सुनकर राजकुमारी उसके कमरे में आयी और बोली "क्या तुम्हारा भैय्या आ गया है?"

"नहीं राजकुमारी, सपना देखा था । उस सपने में मैंने देखा कि मेरे भैय्या को किसी ने नाव से समुद्र में ढ़केल दिया है ।" रजनी आँसू बहाती हुई बोली ।

"सपना ही तो है । व्याकुल क्यों हो रही हो? तुम्हारे भैय्या जैसे बहादूर को कोई आसानी से समुद्र में ढ़केल नहीं पायेगा । वह तो राक्षस जंतु से युद्ध करने थोड़े ही गया है । उसे दूर प्रांत में छोड़ जाने के लिए ही गया हुआ है । वह अवश्य ही दिग्विजयी होकर लौटेगा । तुम निश्चिंत सो जाओ" राजकुमारी ने उसे ढ़ाढ़स दिया ।

राजकुमारी प्रियंवदा ने रजनी को ढ़ाढ़स दिया अवश्य, लेकिन मन ही मन उसे भी भय था कि अब तक उत्तुंग के बारे में कोई ख़बर क्यों नहीं आयी? कहीं राक्षस जंतु से जूझते हुए उस पर कोई बिपदा तो नहीं आयी? अगर ऐसा हुआ तो इससे बुरा राजबंश के लिए और कुछ नहीं होगा । क्योंकि राजा के प्रोत्साहन से ही उत्तुँग इस अभियान पर गया हुआ है । प्रियंवदा ने भगवान से प्रार्थना की कि कोई अनर्थ ना हो और उत्तुँग सुरक्षित लौटे । राज्य और उसकी जनता की रक्षा के लिए गया हुआ वह वीर दिग्विजयी होकर लौटे ।

उत्तुंग नाव में बैठकर तट की ओर बढ़ने लगा । साथ-साथ वह ध्यान से देख भी रहा था कि नागसिंह और सैनिकों की नावें क्या कहीं दिखायी पड़ेंगीं? परंतु उसका प्रयत्न व्यर्थ ही हुआ । वे नावें कहीं दीख नहीं रही थीं । थोड़ी देर के बाद वह समुद्री तट की ऊँची चट्टानों के पास पहुँचा । लहरें बड़ी ही तीव्र थीं । अकस्मात लहर के एक झटके से उसकी नाव उलट गयी और तट पर जा गिरी । उत्तुँग नाव से दूर जा गिरा । भाग्यवश उसे कोई चोट नहीं पहुँची । इस परिणाम की उसे आशंका थी, इसलिए तक्षण ही वह नाव को दूर खींचकर ले गया और बस्ती की ओर भागा । बस्ती पहुँचकर उसने

काबूई का दरवाज़ा खटखटाया । काबूई की बेटी चित्रा ने दरवाज़ा खोला और आश्चर्य से पूछा "तुम? क्या हुआ?"

उत्तुँग जानता था कि कोई भी यही प्रश्न करेगा, परंतु वह उत्तर क्या दे? उसने बड़ी आतुरता से पूछा "काबूई कहाँ है?" उसने संकेत से यह प्रश्न किया ।

"पिताश्री सेनाधिपति के घर गये हैं ।"

"राजा के पास गये?" उत्तुँग ने पूछा । अपना सिर हिलाते हुए उसने कहा "नहीं, सेनाधिपति दुर्जय के पास गये हैं ।" राजधानी की तरफ हाथ दिखाते हुए उसने कहा ।

उत्तुँग दौड़ता हुआ राजधानी गया और सेनाधिपति के घर के निकट पहुँचा ।

अंदर बैठकर सैनाधिपति और काबूई आपस में बातें कर रहे थे । उत्तुँग को देखते हुए वे हड़बड़ाते हुए उठे और दोनों ने एक साथ पूछा "उत्तुँग, क्या हुआ? दलनायक नागसिंह कहाँ है?"

"मैं समुद्र में गिर गया । मुझे मालूम नहीं कि नागसिंह पर क्या बीता" उत्तुँग ने कहा ।

काबूई ने पूछा "क्या राक्षस जंतु ने आक्रमण कर दिया?"

"नहीं, नागसिंह ने आक्रमण किया है ।" उसके रवाना होने के बाद जो जो हुआ सब कुछ स्पष्ट-स्पष्ट बता दिया ।

सब कुछ सुनने के बाद काबूई ने कहा "भाग्यवश तुम संकटग्रस्त नहीं हुए । यही पर्याप्त है ।" प्यार से उत्तुँग के हाथ को अपने हाथ में लेते हुए काबूई ने कहा "यह तो हमारी समझ के बाहर है कि राक्षस जंतु को आकर्षित करनेवाले इन 'शताब्दिका' पुष्पों को ले जाकर नागसिंह आख़िर करेगा क्या?"

सेनाधिपति दुर्जय ने कहा "नागसिंह की दुराशा से हम भली-भौति परिचित हैं । उत्तुँग से जैसे उसने कहा, सिंहासन पर आसीन होने के लिए वह कुछ भी करेगा । अपनी नीच योजना को कार्यान्वित करने के लिए वह राक्षस जंतु को 'शताब्दिका' पुष्पों की आशा देगा और उसे नागपुरि पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करेगा । तब माणिक्यपुरी की जो दुर्गति हुई, हमारी
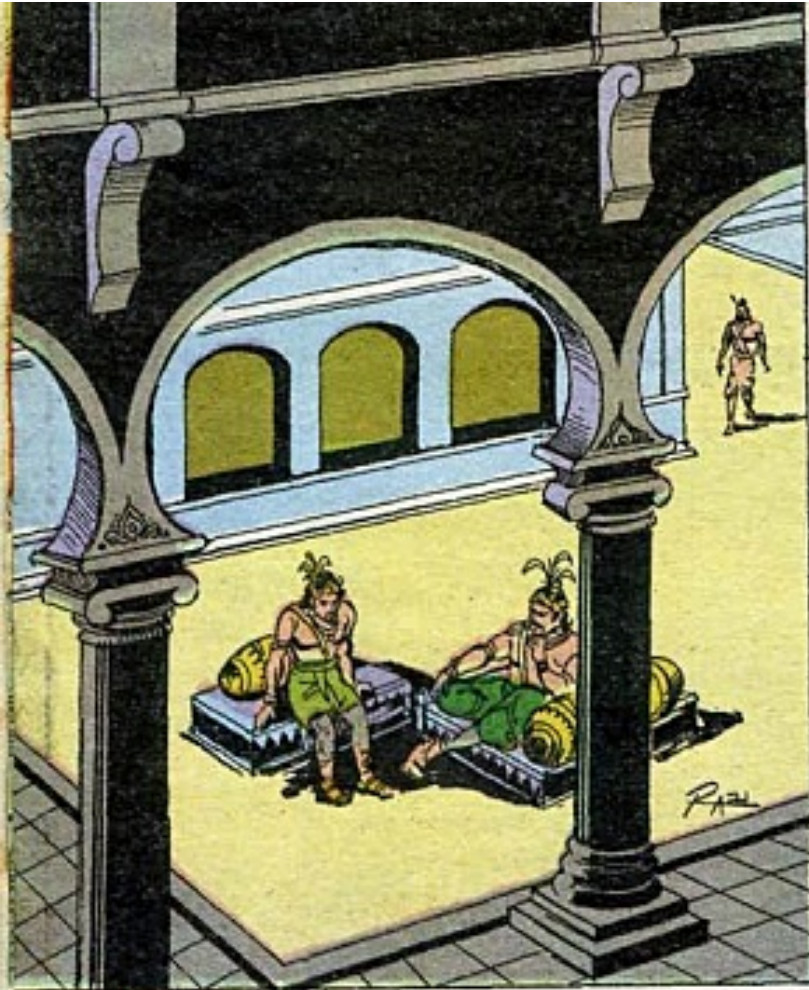
भी होगी ।''

उत्तुँग ने कहा ''परंतु हाँ । हमें एक बात को भुलाना नहीं चाहिये । नागसिंह ने राक्षस जंतु को देखा नहीं है । वह एक ऊँचे पर्वत के जैसे है । समुद्री तट पर जो ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं, उनके बीच में एक ही संकीर्ण मार्ग है और इस मार्ग से नागपुरि में उसका प्रवेश असंभव है ।''

''तब तो चिंता की कोई बात नहीं । हम तक्षण यह समाचार राजा को बताएँगे । राजपरिवार की रक्षा बहुत ही प्रधान है ।'' कहता हुआ सेनाधिपति वहाँ से निकल पड़ा ।

राजा ने उनको देखते ही पूछा ''उत्तुँग तुम अभी नहीं निकले?'' सेनाधिपति की ओर मुड़कर अपना संदेह व्यक्त करते हुए उन्होंने पूछा ''क्या नागसिंह भाग गया?''

''नहीं महाराज, कुछ अप्रत्याशित घटनाएँ घटीं हैं ।'' सेनाधिपति ने राजा को संक्षेप में सब बातें बतायीं ।

सब कुछ सुनकर राजा ने कहा ''दुर्जय, हमारे कुशल-मंगल की बात रहने दो । हमारे राज्य और हमारी प्रजा पर किसी प्रकार की बिपत्ति नहीं आनी चाहिये । हम तक्षण समुद्री तट पर जाएँगे । एक क्षण का भी विलंब ना करें । आज्ञा दें कि हमारे सैनिक मशाल लेकर चल पड़ें । उत्तुँग ने कहा भी है कि राक्षस जंतु अग्नि से भयभीत होता है । तब तो बह हमारे निकट आने का दुत्साहस नहीं करेगा । उत्तुँग, तुम और काबूई तुरंत समुद्री तट पर पहुँच जाओ । सेनाधिपति और मैं सैनिकों को लेकर शीघ्र ही पहुँच जाएँगे । वहाँ पहुँचने के बाद निर्णय करें कि हमारा क्या कार्यक्रम हो?''

''जो आज्ञा महाराज'' कहकर दोनों वहाँ से निकल पड़े । काबूई और उत्तुँग बस्ती जब पहुँचे तब वहाँ के सब स्त्री-पुरुष बड़ी बेसब्री से उनका इंतज़ार कर रहे थे । काबूई घर के अंदर गया और अपनी पत्नी से कुछ बताकर लौटा । उत्तुँग और काबूई को समुद्री तट की ओर वेग से जाते हुए देखकर बस्ती के सब लोग आश्चर्य में डूब गये ।

नागपुरि की राजकुमारी को भी सब बातों का पता लग गया । उसने नागसिंह के बारे में जैसा अनुमान लगाया, वैसा ही हुआ । उस दुष्ट ने राक्षस जंतु तक पहुँचने के पहले

ही उत्तुँग को मार डालने का प्रयत्न किया । अब उसका लक्ष्य स्पष्ट है । अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए पता नहीं, वह आगे-आगे क्या करेगा । अगर राक्षस जंतु से उसने समझौता कर लिया तो मालूम नहीं, भविष्य में इस राज्य पर क्या बीतेगा । इन्हीं विचारों में वह खोयी रही और भगवान से प्रार्थना करने लगी कि नागसिंह अपने प्रयत्न में सफल ना हो और उत्तुँग को सफलता प्राप्त हो ।

दोनों समुद्र के किनारे पहुँचे । ऊँची चट्टानों को लहरें छू रही थीं । इससे जो ध्वनि आ रही थी, उसके अलावा वहाँ का वातावरण बिलकुल ही प्रशांत था । वे दोनों ऊँची चट्टानों पर चढ़े और ध्यान से देखने लगे कि क्या कहीं नावें दिखाई दे रही हैं? अंधकार ही अंधकार था, इसलिए उन्हें कुछ भी दिखायी नहीं पड़ा । थोड़ी देर के बाद समुद्र में दूर से कुछ आवाज़ें अस्पष्ट सुनायी पड़ने लगीं । वे आवाज़ें क्रमशः ज़ोर से सुनायी देने लगीं ।

काबूई ने पूछा "वह नागसिंह की ही आवाज़ है ना?" उत्तुँग ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह बराबर समुद्र की ही ओर देखता रहा । बहुत देर तक देखने के बाद उसने कहा "काबूई, देखो वह राक्षस जंतु ।"

काबूई ने कहा "कहाँ? मुझे तो कुछ दिखायी नहीं दे रहा है ।"

उत्तुँग ने हाथ उठाकर दिखाते हुए कहा "वहाँ, मेरी उँगली के सीधे देखो । राक्षस जंतु पर्वत की तरह धीरे-धीरे बढ़ा चला

आ रहा है ।"

"हाँ, हाँ, तुमने ठीक ही कहा है । कोई पर्वत दीख रहा है । परंतु भला पर्वत कैसे चल सकता है?" काबूई ने पूछा ।

"इसके पहले क्या कभी किसी पर्वत को वहाँ देखा है? तो तुम्हीं सोचो कि फिर अकस्मात यह पर्वत कहाँ से आ गया?" उत्तुँग ने पूछा ।

"हाँ, हाँ, पर्वत नहीं है । पर्वत जैसा कोई प्राणी चला आ रहा है । तुमने जो कहा सच है" काबूई उसे ही लगातार देखते हुए बोला ।

"वह राक्षस जंतु है । नावों के पीछे-पीछे आ रहा है । अच्छी तरह देखो, दो नावें भी हैं । इतना बड़ा जंतु इस संकीर्ण मार्ग से

आ नहीं सकेगा ना?" उत्तुंग ने पूछा ।

"हाँ, नहीं आ पायेगा । देखते हैं कि क्या होगा? इस बीच राजा भी आ जाएँ तो अच्छा होगा" काबूई ने कहा ।

उत्तुंग ने कहा " देखो, राजा आ गये ।" काबूई ने मुड़कर देखा । सैनिक हाथों में मशालें लिये चले आ रहे हैं । मशालों के प्रकाश में राजा और सेनाधिपति स्पष्ट दीख रहे हैं । थोड़ी देर में वे सब उस चट्टान पर पहुँच गये, जहाँ उत्तुंग और काबूई थे । मशालों का प्रकाश समुद्र में थोड़ी दूरी तक व्याप्त हुआ । उस प्रकाश में सबने देखा कि दोनों नावें तेज़ी से तट की ओर आ रही हैं । एक नाव में खड़ा व्यक्ति हाथ उठाकर कुछ कह रहा है । नावों के पीछे का बृहत आकारवाला आगे बढ़ रहा हैं ।

सेनाधिपति चिल्ला पड़ा "वह देखो राक्षस जंतु ।" राजा ने कहा "हाँ, मुझे भी दिखायी दे रहा है ।"

थोड़ी देर में वह और आगे आ गया, जिससे उसका रूप स्पष्ट दिखाई देने लगा । वह हाथ उठाकर नावों को पकड़ने की कोशिश कर रहा है । उसके हाथों के लग जाने से नावें डोल रही हैं । नाव में खड़ा व्यक्ति नाव के डोलने की वजह से संतुलन खो जाने के कारण धड़ाम से गिर गया ।

सेनाधिपति ने आज्ञा दी "मशालों को राक्षस जंतु पर फेंको ।" सैनिकों ने मशालों को बाणों की तरह निशाना बनाकर राक्षस पर बौछार करना शुरू कर दिया । बग़ल में खड़े सैनिक मशालों को जलाकर उन्हें देते जा रहे थे ।

कुछ मशालें समुद्र में गिर गयीं । और कुछ नाव में गिर गयीं । राक्षस जंतु प्रकाश को सह नहीं पा रहा था, इसलिए एक हाथ से आँखों को छुपा रहा था और दूसरे हाथ से नाव को कसकर पकड़े रखा था । जलती हुई दो तीन मशालें उसके शरीर पर जा गिरीं, जिससे वहाँ लपटें उठीं । वह राक्षस जंतु तुरंत पानी में उतरा और आग के बुझ जाने के बाद बहुत ही क्रोधित होते हुए ऊपर आया और बिखरे हुए 'शताब्दिका' पुष्पों को समेटने लगा । उन फूलों के साथ-साथ कुछ

सैनिक भी उसकी मुट्ठी में आ गये और वे बिलखने लगे। उसने फूल ले लिये और सैनिकों को दूर फेंक दिया। सैनिकों में त्राहि त्राहि मच गयी।

तट से यद्यपि सैनिक लगातार मशालें बाणों की तरह छोड़ रहे थे, फिर भी वह फूलों को समेटने में संलग्न रहा। फूलों को चुन लेने के बाद वह धीरे से पीछे मुड़ा। किन्तु अग्नि-बाणों की बौछार के कारण उसका शरीर एकदम जल उठा। उस समय उसका सिर अग्नि की गेंद की तरह दीखने लगा। वह ज़ोर से कराहते हुए पानी में डूब गया। फिर उसका कोई पता नहीं चला।

राजा ने उस भयानक दृश्य को देखा और गहरी साँस लेते हुए कहा "राक्षस जंतु मर गया होगा। नहीं तो, अब तक पुष्पों के लिए ऊपर आ गया होता। लगता है, उससे हमारा पिंड छूट गया है।"

कुछ देर के बाद उन्होंने देखा कि कुछ सैनिक तैरते हुए तट की तरफ़ आ रहे हैं। उनको देखकर सेनाधिपति ने राजा से कहा "आपने ठीक कहा है। राक्षस जंतु मर गया है। उन सैनिकों के आने पर शेष विवरण भी जान सकते हैं। कुछ सैनिकों को यहाँ छोड़कर हम राजधानी लौटेंगे।"

काबूई ने कहा, "मालूम नहीं कि नागसिंह पर क्या गुज़रा और वह है कहाँ?"

"मै इसका पता लगाऊँगा। महाराज, आप अनुमति दें तो आज रात को इन सिपाहियों के साथ यहीं रहूँगा और पूरा विवरण जानने के बाद कल सबेरे राजधानी आऊँगा। आपकी कृपा से जिस काम पर मैं निकला, उसमें आधा काम हो गया। कल निर्णय करेंगे कि माणिक्यापुरी कब लौटना है?"

राजा ने खुश होते हुए कहा "ऐसा ही करेंगे।"

कुछ सैनिकों को उत्तुंग के पास छोड़कर राजा, सेनाधिपति और काबूई बाक़ी सैनिकों के साथ राजधानी निकल पड़े।

(सशेष)

विवेक

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया । पेड़ से लाश को उतारा और अपनी भुजाओं पर ड़ाल लिया । यथावत् श्मशान की तरफ बढ़ा । तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन, मैं तुम्हारी जितनी भी प्रशंसा करूँ, कम है । इस भयंकर अंधकार में विषसर्पं तथा पिशाचों की परवाह किये बिना निश्चिंत अपने लक्ष्य को साधने में तल्लीन हो । तुम्हारा कठोर परिश्रम सराहनीय है । पर मेरी समझ में अब तक यह नहीं आया कि क्यों अनावश्यक अपनी जान पर खेले जा रहे हो? अगर तुम अपनी पत्नी तथा संतान के लिए यह सब कुछ कर रहे हो, तो ठीक है । तब तो तुम अवश्य ही प्रशंसा के योग्य हो । क्योंकि अग्नि को साक्षी बनाकर जिस अर्धांगिनी को तुमने स्वीकार किया है, जो जीवन भर तुम्हारा साथ देगी, उसके प्रति अपने कर्तव्य निभाकर तुम धर्म की राह पर चल रहे हो । धर्मपत्नी

बैताल कथा

के साथ-साथ संतान की अभिवृद्धि तथा सुखमय भविष्य के लिए तुम यह परिश्रम कर रहे हो तो कहना पड़ेगा कि तुम कर्तव्यनिष्ठ, धर्मपरायण व सद्गुणी हो। ऐसा ना होकर अपने बूढ़े माँ-बाप की अर्थहीन इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपनी पत्नी व बच्चों की बलि चढ़ा रहे हो तो इससे बढ़कर मूर्खता और कोई नहीं होगी।

अपने माता-पिता की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए अपनी पत्नी और संतान को ठुकराना महापाप है, उनके प्रति किया जानेवाला घोर अन्याय है। एक बूढ़े पिता को दिये हुए वचन की पूर्ति के लिए एक राजा ने अपनी गर्भवती स्त्री का प्राण संकट में ड़ाल दिया। उस ऐसे एक अविवेकी राजा की कहानी तुम्हें सुनाता हूँ। सुनो।" फिर बेताल ने यों कहना शुरु किया।

अंगराज्य का शासक मकरध्वज वृद्ध हो गया। शासन संभालने की शक्ति क्षीण हो गयी। उसे ज्ञात हो गया कि मैं किसी भी दिन का अतिथि हूँ, मेरे प्राण-पखेरू किसी भी क्षण उड़ सकते हैं।

इन परिस्थितियों में उसने अपने पुत्र से एक दिन कहा "पुत्र मलयसिंह, मैं वृद्ध हो गया हूँ, परंतु इहलोक की मेरी इच्छाएँ अब भी शेष हैं। सुख-भोग की लालसा अब भी मुझमें जीवित है। मैं और कुछ समय तक जीवित रहना चाहता हूँ। किन्तु प्रकृति धर्म के अनुसार वृद्ध हो जाने के बाद मृत्यु निश्चित है, चाहे वह कितना भी महान व्यक्ति क्यों ना हो। कल नहीं तो परसों मेरा मरना निश्चित है। लेकिन मेरे मरने के बाद मेरे शव को जलाना नहीं। मेरा शव गल ना जाए, केवल हड्डियाँ ना बच जाएँ, इसके लिए आवश्यक लेपन करावो। मेरे शव को सुरक्षित रखो। भविष्य के बारे में कोई क्या कह सकता है? हो सकता है, भविष्य में वैद्य शास्त्र इतनी उन्नति करे कि वह मेरे को ज़िन्दा कर दे, प्राणदान दे। यह भी संभव है कि कोई दीर्घ तपस्वी, महोन्नत ऋषि अपनी तपोशक्ति से मुझमें प्राण फूँक दे। जो भी हो, इसे अपने पिता की अंतिम इच्छा मानकर अवश्य पूरी करो।"

इसके सप्ताह के अंदर ही मकरध्वज

की मृत्यु हुई ।

अपने पिता की इच्छा के अनुसार मलयसिंह ने अपने पिता के शव को नहीं जलाया । चंदन से बनी एक विशिष्ट पेटी में उसे सुरक्षित रखा ।

उपरांत, मलयसिंह अंगराज्य के सिंहासन पर आसीन हुआ । कलिंग राज्य की राजकुमारी विद्युल्लता से विवाह रचाया । विद्युल्लता सौंदर्य में असमान व अद्वितीय थी । साथ ही उसकी सुशीलता ने उसके सौंदर्य में चार चाँद लगा दिये ।

विद्युल्लता गर्भवती हुई । आस्थान के ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि लड़का होगा । ज्योतिषी के चेहरे को देखकर मलयसिंह को लगा कि ज्योतिषी कुछ और भी बताना चाह रहा है, लेकिन बताने से ड़र रहा है । तब मलयसिंह ने उसे आश्वासन देते हुए कहा "जो है स्पष्ट कहिये । कुछ भी छिपाइये मत ।"

तब ज्योतिषी ने कहा "महाराज, एक महीने के अंदर महारानी को सर्प के डसने का ख़तरा है ।"

राजदंपति ज्योतिषी की इस भविष्यवाणी पर बहुत ही व्याकुल हुए । अब तक उन्हें इस बात पर अपार हर्ष हो रहा था कि राजसिंहासन पर आसीन होने के लिए राजकुमार पैदा होनेवाला है; अपने वंश का वारिस आनेवाला है । लेकिन ज्योतिषी की बातों से क्षण भर में उनका आनंद, दुख में बदल गया ।

उस दिन से राजा ने राज्य में दिखाई देनेवाली हर बाँबी को खोदकर उसमें साँप दिखायी पड़े तो उसे मारने की आज्ञा सैनिकों को दी । हर घर में नेवले को पालना अनिवार्य कर दिया ।

मलयसिंह स्वयं एक चील को पालने लगा । वह चील सदा पालतू तोते की तरह उसके कंधे पर बैठा रहता था ।

महरानी बिना किसी आफ़त के कुछ समय तक मुक्त रही । पूर्ण चंद्रमा का दिन था । सर्प के ख़तरे की जो भविष्यवाणी की गयी, वह दिन आज ही था । बिना किसी दुर्घटना के आज का दिन टल गया तो समझना होगा कि आफ़त टल गयी ।

विद्युल्लता ने अपने पति से कहा "खिली

इस चाँदनी में थोड़ी देर बग़ीचे में घूमने को जी चाहता है । आप 'हाँ' कहें तो चलें?"

मलयसिंह उसकी इच्छा अस्वीकार कर ना सका । दोनों बग़ीचे में टहलने लगे । उस समय जो चील विद्युल्लता के कंधे पर था, अकस्मात उड़ा और पास के अशोकवृक्ष पर रेंगनेवाले साँप को लेकर हवा में उड़ चला । परंतु दुर्भाग्य, साँप ने अपने को चील के पंजे से छुड़ाया और ठीक विद्युल्लता की भुजा पर आ गिरा ।

इस आकस्मिक आक्रमण से भयभीत होकर रानी ने ज़ोर से चिल्लाया । सर्प ने अपना फन फैलाया और रानी के कंधे पर डस दिया । बिष के प्रभाव से रानी भूमि पर अचेत गिर पड़ी ।

राजवैद्य दौड़े-दौड़े आये । चिकित्सा प्रारंभ करने के पहले ही रानी ने अपने प्राण छोड़ दिये । रानी को देखते हुए लग रहा था कि वह अद्भुत सौंदर्यराशि निद्रावस्था में है । इस स्थिति में उसे देखकर राजा अग्नि को समर्पित नहीं कर पाया । उसके शव पर भी लेपन पुतवाया और उसे चंदन की पेटी में सुरक्षित करवाया । फिर अपने पिता का शव जिस कमरे में रखा गया, उसी में रखवा दिया ।

कालगर्भ में कुछ माह बीत गये । हिमालय पर्वतों पर तपस्या करनेवाले महर्षि चैतन्य आनंद स्वामी उस राज्य में पधारे । उन्होंने मुस्कुराते हुए राजा मलयसिंह को आशीर्वाद दिया और कहा "पुत्र, तुम्हें मुझसे कुछ बताने की कोई आवश्यकता नहीं है । जो हुआ है, वह सब मैं जानता हूँ । प्रकृति के विरुद्ध

किये जाने वाले कार्य विनाश के हेतु होते हैं । अपने पिता के शव को ना जलाकर तुमने उसे सुरक्षित रखा, इसीलिए दुर्घटना घटी और उससे तुम्हारी धर्मपत्नी की अकाल मृत्यु हुई । अब भी कुछ नहीं हुआ । अपने पिता के शव की दहन-क्रियाएँ करवाओ । तुम्हारी पत्नी जीवित होगी ।"

मलयसिंह सोच में पड़ गया । फिर हाथ जोड़कर बोला "स्वामी, क्या आप मृतकों को प्राणदान नहीं देंगे?" उसने बड़े विनय से पूछा । महर्षि हँसते हुए बोले "मेरी तपोशक्ति केवल एक ही प्राणी को बचाने तक सीमित है । कहो, किसको बचाऊँ? पत्नी को या पिता को?"

तक्षण ही मलयसिंह ने कहा "पिताश्री मकरध्वज को प्राणदान दीजिये ।"

"तुम महान विवेकी हो । इसीलिए अपने तीनों प्रियजनों को जीवन दे पा रहे हो ।" महर्षि ने मलयसिंह का अभिनंदन किया ।

बेताल ने यह कहानी सुनायी और कहा "राजन्, चैतन्यस्वामी की बातों में पारस्परिक वैरुध्य दिखाई दे रहा है । लगता है, वे अपनी ही बात के विरुद्ध कह रहे हैं । प्रथम तो उन्होने बताया कि अपनी तपोशक्ति से एक ही को जीवित कर पाऊँगा । लेकिन, मलयसिंहने जैसे ही अपने पिता को बचाने की प्रार्थना की, तो उन्होंने तक्षण कह दिया 'अपने विवेक से तीनों को जीवन दे रहे हो ।' जब कि महर्षि की संपूर्ण शक्ति एक ही को जीवित करने तक सीमित है, तो तीन को प्राणदान देना कैसे संभव है? मेरी दृष्टि में यह असंभव है । थोड़ी

देर के लिए समझ लो कि यह संभव है, पर यह तो बताओ कि महर्षि के कहे अनुसार मलयसिंह अपने पिता की दहनक्रियायें करवाता तो विद्युल्लता के मरने की बात ही नहीं उठती । अर्धांगिनी की बात भुलाकर अपने वृद्ध पिता को बचाने की प्रार्थना करना राजा का अविवेक है, अक्षम्य अपराध है । राजा यही चाहता था ना कि सब लोग उसे पितृभक्ति परायण कहकर उसकी प्रशंसा करें? थोड़ी देर के लिए इसे भी भुला दें । महर्षि की बातों में एक बात मेरी समझ में नही आ रहीं है । हम तो केवल मलयसिंह के पिता और पत्नी को ही जानते हैं । पर महर्षि ने जिस तीसरे प्राणी के बारे में बताया, वह तीसरा प्राणी है कौन? मेरे इन संदेहों का सामाधान जानते हुए भी चुप्पी साधोगे तो तुम्हारा सर फट जायेगा ।"

विक्रमार्क ने बेताल के संदेहों का निवारण करते हुए कहा "राजा मलयसिंह को केवल पितृभक्त समझना भूल होगी । वह अपनी धर्मपत्नी को जान से भी ज्यादा चाहता था । इसीलिए पत्नी की मृत्यु के बाद उसने दूसरे बिवाह का प्रयत्न ही नहीं किया; ऐसा विचार मन में आने ही नहीं दिया । महर्षि ने कहा है कि मकरध्वज के शव की अंतिम क्रियायें ना करने के दोष ही के कारण विद्युल्लता की अकाल मृत्यु हुई है । उन बातों से मलयसिंह समझ गया कि अगर महर्षि अपने पिता को प्राणदान देंगे तो दोष का निवारण हो जायेगा और उसकी धर्मपत्नी भी जीवित हो जायेगी ।

इसीलिए उसने महर्षि से अपने पिता को प्राणदान देने की प्रार्थना की । इस सूक्ष्मता को जानने के उपलक्ष्य में महर्षि ने 'महान विवेकी' कहकर मलयसिंह का अभिनंदन किया । विद्युल्लता बच गयी तो इसका मतलब यही हुआ कि उसके गर्भ में जो शिशु है, वह भी वच गया । उस शिशु को ही महर्षि ने तीसरा प्राणी बताया ।"

राजा का मौनभंग करके बेताल शव को लेकर उड़ पड़ा और फिर से पेड़ पर जा बैठा ।

(आधार-आर. पट्टाभि की रचना)
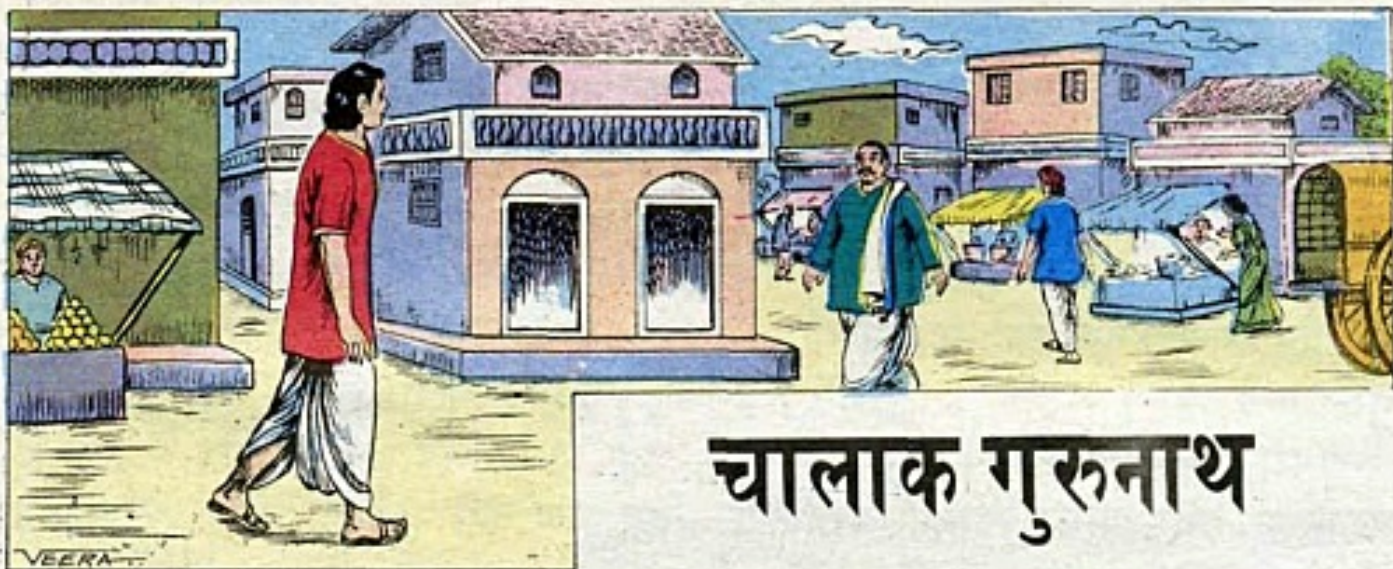
चालाक गुरुनाथ

गुरुनाथ बहुत ही चालाक युवक था । शहर जाकर बस जाने की उसकी प्रबल इच्छा थी । गाँव में उसका एक बहुत ही पुराना घर था । वह बहुत दिनों से उसे बेचने की कोशिश में था, परंतु कोई भी पाँच सौ अशर्फ़ियों से अधिक देने के लिए तैयार नहीं था ।

गुरुनाथ जब एक बार शहर गया तो रामराज नामक एक व्यक्ति से परिचय हुआ । बातों-बातों में रामराज ने कहा कि मैं दमे की बीमारी वजह से बहुत ही परेशान हूँ । डाक्टर ने सलाह दी है कि वातावरण के परिवर्तन के लिए मेरा कहीं और जाकर रहना आवश्यक है ।

गुरुनाथ ने तक्षण ही आनंद से पूछा "डाक्टरों का अभिप्राय अगर जगह बदलने का है तो इसका अर्थ यह हुआ कि गाँव में जाकर रहो । है ना?"

"हाँ, उनका यही अभिप्राय है । शहर के नज़दीक के किसी गाँव में कोई घर बिक्री के लिए हो तो मैं खरीदना चाहूँगा और वहीं रहूँगा ।" रामराज ने कहा ।

गुरुनाथ ज़ोर से हँसता हुआ बोला "तो फिर देरी क्यों? लगता है, भाग्यदेवता ने हम दोनों की भेंट करवायी है । आपके लिए हमारा गाँव बहुत ही अच्छा होगा । मैं भी अपना घर बेचना चाहता हूँ । केवल पंद्रह सौ अशर्फियाँ हैं । उसे आप खरीद लीजिये ।"

"घर खरीदना मेरे लिए कोई बड़ी समस्या नहीं है । पहले मुझे जानना तो यह है कि तुम्हारे गाँव का मौसम मेरे लिए सही होगा या नहीं?" रामराज ने कहा । "इस विषय में आप निश्चिंत रहिये। हमारे गाँव के वातावरण का भी क्या कहना । मलयमारूत चलता रहता है । मुझे ही देखिये, कितना

स्वस्थ हूँ। पच्चीस सालों के पहले जब मैं अपने गाँव आया था, मैं चल नहीं पाता था। पलंग पर ही पड़ा रहता था। अब आप ही देखिये, कैसा दीख रहा हूँ। यह सब मेरे गाँव का पानी तथा हवा का प्रभाव है।" गुरुनाथ ने कहा।

रामराज, गुरूनाथ के गाँव गया। उसका घर देखा। और आखिर पंद्रह सौ अशर्फ़ियाँ देकर उसे खरीद भी लिया।

उस गाँव में एक आदमी था, जो गुरुनाथ का कट्टर दुश्मन था। गुरुनाथ के घर का बिक जाना उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। उसने रामराज से कहा "उस चालाक गुरुनाथ ने आपको सरासर धोखा दिया है। उसने जो भी आपसे कहा, सफ़ेद झूठ है। वह तो इसी गाँव में जन्मा और यहीं बड़ा हुआ। कभी भी वह इतना तो बीमार नहीं पड़ा कि चल ना पाये।"

रामराज ने गुरुनाथ को गाँव में ढूँढ लिया और उससे पूछा "मैंने तो समझा कि तुम भले आदमी हो। तुमने मुझसे कितना बड़ा झूठ कह ड़ाला" क्रोधित हो बोला।

गुरुनाथ ने बड़ी नादानी से उत्तर दिया "महाशय, आपको कोई ग़लतफ़हमी हुई है। झूठ बोलने की कला में जो प्रवीण होता है, वह तो शहर में रहता है, गाँव में नहीं।"

"अधिक होशियारी मत जता। तुमने तो कहा था कि जब तुम इस गाँव में आये तो तब चल नहीं पाते थे, पलंग पर ही पड़े रहते थे। मैने तहकीकात की तो मालूम हुआ कि तुम तो कभी बीमार ही नहीं पड़े थे।" रामराज ने कहा।

"अच्छा, आपके क्रोध का यह कारण है? तो सुनिये। क्षमा कीजिये। क्या मैंने आपसे कहा था कि मैं बीमार पड़ा था? इस गाँव में का मतलब तो यही हुआ कि जब मैं जन्मा था, तब मैं चल नहीं पाता था, खाट पर पड़ा रहता था। मैंने तो आपसे कहा भी था कि इस गाँव का जल और हवा तंदुरुस्ती के लिए अच्छे हैं। अगर वे अच्छे नहीं होते तो क्या मेरा इतना तंदुरुस्त होना संभव है?" रामराज को शांत करते हुए गुरुनाथ ने कहा।

चन्दामामा परिशिष्ट-६५

हमारे देश के पशु-पक्षी

शांतिचिन्ह

बाइबिल की कहानी कहती है कि जब जलप्रलय हुआ, तब नोवा के परिवार ने, कुछ पक्षियों और जंतुओं के साथ नौका में यात्रा की। नौका में यात्रा करते हुए नोवा ने एक कबूतर को यह जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा कि पास ही में क्या कहीं भूमि दिखायी दे रही है? वह कबूतर दो बार उड़कर गया और वापस लौटा। तीसरी बार जब गया, तब अपने मुँह में 'आलिव' की एक सूखी लकड़ी को मुँह में दबोचे लौटा। जिस दिशा में कबूतर हो आया, उसी दिशा में नोवा ने नौका चलायी और सुरक्षित भूमि पर उतरा। कबूतर शांति का चिन्ह है। जब कभी भीउसकी तस्वीर खींची जाती है तब आज भी देखा जाता है कि उसके मुँह में एक सूखी लकड़ी होती है। जिस प्रकार शांतिदूतों में पारस्परिक झगड़े नहीं होते उसी प्रकार कबूतर अपनी बिरादरी में अथवा अन्य पक्षियों से प्रायः नहीं झगड़ते।

कबूतरों की ही तरह दीखनेवाले ये छोटे पक्षी उनसे छोटे हैं। गले के पीछे अंगूठी जैसी रेखा जिस कबूतर पर होती है, उसे 'अंगूठी कबूतर' कहते हैं। इसका शरीर हल्के खाकी रंग का होता है। बैंगनी रंग के कबूतर 'अंगूठी कबूतरों' से छोटे होते हैं। बैंगनी रंग के कबूतरों के पंखों पर दाग होते हैं।

सब कबूतरों में से लाल और बैंगनी रंग के कबूतर ही बड़े हैं। उसके गले के दोनों ओर काले दाग, नीले और खाकी रंग की रेखाएँ होती हैं। लेकिन पूँछ सफ़ेद या खाकी रंग की होती है। बिंदीवाले कबूतर देखने में बहुत ही सुंदर होते हैं। खाकी रंग की पेट के निचले भाग में सफ़ेद बिंदियाँ होती हैं। इन कबूतरों के गलों पर सफ़ेद और काली बिंदियाँ होती है। इन्हें देखने पर लगता है मानों क़रीने से वे सजायी गयी हों।
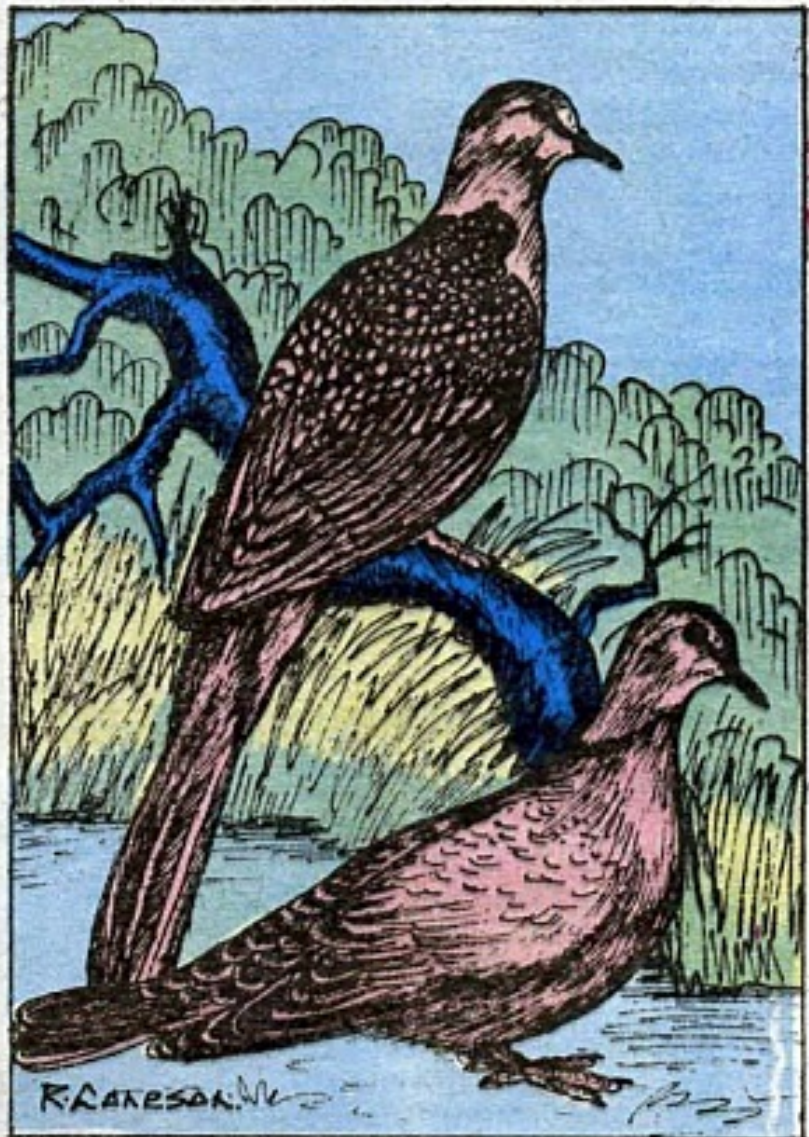
रवींद्रनाथ टागौर

विश्वकवि रवींद्रनाथ टागौर एक बार जहाज़ में पेरू जा रहे थे । रास्ते में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया । जहाज़ के डाक्टर ने सलाह दी कि वे जहाज़ की यात्रा रोक दें और कुछ दिनों के लिए कहीं विश्राम लें । उनके हितचिंतकों ने भी यही सलाह दी । उनकी सलाह के मुताबिक़ टागौर ब्यूनोस एयर में उतर गये ।

विक्टोरिया ओकांपो रवींद्रनाथ टागौर को बहुत चाहती थी । वहाँ उन्होने उनका सादर स्वागत किया और नगर के बाहरी प्रांत मे उनका अपना जो घर था, वहाँ उन्हें ठहराया । स्वास्थ्य जैसे ही ठीक हुआ, टागौर लगातार कविताएँ रचते गये ।

एक दिन विक्टोरिया ओकांपो, टागौर से रचित कविताओं के नोट बुक के पन्ने पलट रही थीं, तो उन्होने देखा कि टागौर ने स्याही से कहीं-कहीं सुँदर चित्र खींचे
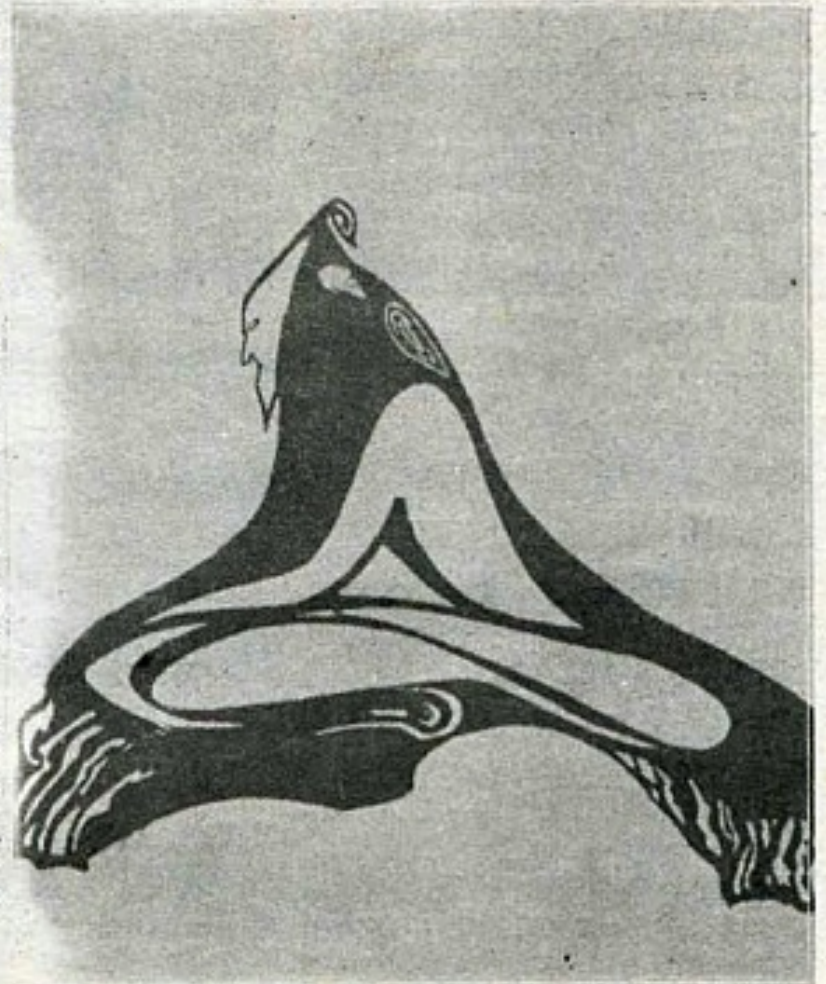
हैं । मुख्यतया मानवों के चित्र देखकर उनके आश्चर्य की सीमा ना रही । उन चित्रों में कला सजीव व स्फूर्तिदायक लग रही थी । अत्यंत प्रसन्न होती हुई उन्होने टागौर से कहा '' क्या आप जानते हैं, आप कितने बड़े कलाकार हैं?''

टागौर मंद मुस्कराये और चुप रह गये । उस महान कवि के अंतराल में जिस अद्भुत चित्रकला की प्रतिभा छिपी हुई थी, उसे इन बातों से प्रोत्साहन मिला ।

यह घटना सन् १९२४ में हुई । तब रवींद्रनाथ टागौर की उम्र थी ६७ वर्ष । टागौर की कल्पना-शक्ति नितनूतन थी, इसलिए इस उम्र में भी वे चित्र खींचने का कार्य बड़े उत्साह से जीवन के अंत तक करते रहे । अर्थात उसके उपरांत सत्रह साल उन्होने चित्रकला का यह कार्य जारी रखा ।

टागौर साधारणतया मामूली स्याही से कागज़ों पर चित्र खींचा करते थे । मानवों के मुख, पक्षियों के तथा प्रकृति के दृश्य उनकी पसंद के विषय थे । यद्यपि उनके चित्रों पर पाश्चात्य प्रभाव अवश्य ही दिखता है फिर भी, चित्र विलक्षण और मौलिक होते थे । उन्होंने कहा ''जीवन के विविध क्षेत्रों में नाना प्रकार के अनुभवों का स्वाद हम चखते हैं । ये अनुभव मुक्त हैं, किसी सीमित क्षेत्र में बद्ध नहीं हैं । ऐसे अनुभवों को सदा मनन करते हुए आगे बढ़ते जाने की एकांत यात्रा ही कला है ।''

रवींद्रनाथ टागौर की मृत्यु १९४१ में हुई । तब तक उन्होने २,५०० चित्र खींचे थे । इन चित्रों से आधुनिक भारतीय कलाकारों को बहुत ही स्फूर्ति व मार्गदर्शन मिलता है ।

क्या तुम जानते हो?

१. अमेरीका के राष्ट्रीय झंडे में कितनी रेखाएँ है । वे क्या सूचित करती हैं?
२. भरतमुनि ने "नाट्य शास्त्र' की रचना की । कहा जाता है कि भरत नामक शब्द भारतीय संगीत के तीन अंशों को सूचित करता हैं । वे अंश कौन हैं?
३. इटली में 'सुवर्ण सेब' किसे कहते हैं?
४. 'कवियों का कवि' अंग्रेज़ी में कौन कहे जाते थे?
५. 'काबूकी' नृत्य किस देश का है?
६. एक पुष्प वृक्ष दूसरे देश से हमारे देश में लाया गया । वह वृक्ष यहाँ जीवित है, लेकिन उस देश में उसका नाश हो चुका है । वह कौन-सा पेड़ है और देश कौन-सा है ।
७. १९१८ में 'ऐसलान्ड' किस देश से मुक्त हुआ और स्वतंत्र हुआ?
८. इंग्लैंड से आस्ट्रेलिया तक अकेले ही हवाई जहाज़ की यात्रा करनेवाली महिला कौन थीं?
९. संसार में सबसे बड़ा चर्च कौन-सा है?
१०. जब एक द्वीप रोम के हस्तगत हुआ तब एक नवीन राज्य का बीज बोया गया । उस द्वीप का नाम क्या है? और यह कब हुआ?
११. राजा कुमारगुप्त तथा उसके पुत्र स्कंदगुप्त के समकालीन सुप्रसिद्ध खगोल-गणित के शास्त्रज्ञ कौन थे?
१२. जब इग्लैंड और आयरलैंड एक ही राज्य में परिणित हुए तब एक रानी शासन चलाती थी । उसका नाम क्या है?
१३. काली जाति के नेता मार्टिन लूथर किंग किस नगर में पैदा हुआ?
१४. रांगा किस देश में अधिक उत्पन्न किया जाता है?
१५. हमारे झंडे में अशोक चक्र है । उसी तरह सब देशों के झंडों में कोई ना कोई चिन्ह होते हैं । लेकिन अफ्रीका के एक झंडे पर कोई भी चिन्ह नहीं है । उस देश का नाम क्या है? झंडा कौन-सा है?

उत्तर

१. तेरह रेखाएँ । स्वतंत्रता के पूर्व जो तेरह उपनिवेश थे, उनको सूचित करती हैं ये रेखाएँ ।
२. भाव, राग, ताल
३. टमोटो
४. एडमंड स्पेन्सर (१५५२-९१)
५. जापान
६. गुलमोहर, मडगास्कर
७. डेनमार्क
८. एमी जानसन
९. वटिकन नगर का सैंट पीटर्स बासिलिका
१०. सिसिली (इ. पू. २४१)
११. आर्यभट्ट
१२. अनी रानी
१३. अमेरीका का अटलांटा
१४. मलेशिया
१५. लिबिया, हरा झंडा ।

धर्म-अधर्म

नीरजा पैदा हुई और पली शहर ही में। पहली बार उसे गाँव देखने का अवसर मिला। अपने मामा की बड़ी बेटी की शादी पर गाँव में आयी है। वह गाँव पहाड़ के समीप है। उसका पिता नीलकंठ शहर में हीरों का बड़ा व्यापारी है। सगी बहन की बेटी की शादी है, इसलिए किसी प्रकार समय निकालकर वह गाँव आया है।

विवाह के मुहूर्त पर वधु-वर को आशीर्वाद दिया और जल्दी-जल्दी में खाना खाकर शहर निकल पड़ा नीलकंठ। नीरजा ने तब अपने पिता से कहा "मैं एक सप्ताह यहाँ रहकर लौटना चाहती हूँ। गाँव के चारों ओर के बग़ीचों और पहाड़ों ने मेरा मन मोह लिया है।"

नीलकंठ अपनी बेटी को ऐसा करने से मना करने ही वाला था कि उसकी दूसरी भानजी कमला ने दख़ल देते हुए कहा "मामाजी, नीरजा को जो भी यहाँ देखना है, दिखाऊँगी और मैं स्वयं उसे लाकर घर छोड़ दूँगी। 'हाँ' कर दीजिये ना मामाजी।"

नीलकंठ को उनकी बात माननी ही पड़ी।

नीरजा को उस गाँव के आम के बग़ीचे बहुत अच्छे लगे। पहाड़ी पर निर्मित देवी का मंदिर भी उसे बहुत अच्छा लगा। गुलाबी फूलों का बाग़ भी उसे अच्छा लगा, जो उसके मामा की बेटियों ने लगाया है। गुलाबी फूलों के बाग़ ही के पास पहाड़ है। उस पहाड़ से सूर्योदय का दृश्य देखते ही बनता है। नीरजा उस मनोहर दृश्य को देखती ही रह जाती। इस रमणीय दृश्य को देखने के लिए वह प्रातःकाल ही उठती, नहाती और कमला के साथ गुलाब के फूलों के बाग़ में जाती।

तबीयत ठीक ना होने के कारण कमला उस दिन नीरजा के साथ नहीं गयी। वह

अकेली ही बाग़ में आयी और सूर्योदय के मनमोहक दृश्य को जी भर देखती रही। जब वह लौटने लगी तब उसने एक स्थल पर हथेली भर का ाड़ा सफ़ेद गुलाबी फूल देखा। उसे तोड़ने े लिए उसने हाथ क्या बढ़ाया, उसे लगा कि काँटा पाँव में चुभ गया है।

दर्द से कराहकर उसने फूल तोड़ना छोड़ दिया और पाँव की ओर झुककर देखा। उसने देखा कि रक्त की दो बूँदें पाँव पर हैं। उसने साथ ही साथ देखा कि एक काला नाग बग़ल की झाड़ी में तेज़ी से घुस गया।

जैसे ही उसे मालूम हुआ कि साँप ने उसे डसा है, वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

नीरजा जब होश में आयी, तब उसने अपने आप को एक कुटीर में खाट पर पड़ी पाया। उसके बग़ल में ही एक युवक बैठा हुआ है और बड़ी तीक्षणता से उसे देखे जा रहा है। नीरजा को जागती हुई देखकर वह युवक बहुत ही आनंदित हुआ और तृप्ति से अपने सिर को हिलाते हुए बोला "अब कोई भय नहीं। बताओ, अब तुमको कैसा लग रहा है?"

नीरजा ने सिर हिलाते हुए संकेत में कह दिया कि ऐसी कोई बात नहीं है। वह उठने ही वाली है कि उस युवक ने उससे कहा "थोड़ी देर और आराम कर लो। तुमको गुलाबों के बाग़ में ज़मीन पर पड़ी हुई देखा। तुरंत तुम्हारे लोगों को ख़बर दी और तुम्हें यहाँ ले आया। तुम्हारी चिकित्सा की।"

तब वहाँ नीरजा के मामा और मामी आये। होश में आयी हुई नीरजा को देखकर उन्हें अत्यंत आनंद हुआ।

नीरजा की मामी ने युवक के दोनों हाथों को पकड़ते हुए कहा "बेटे राजेश, हमारी नीरजा को तुमने पुनर्जन्म दिया है।" नीरजा के मामा ने उसे घर ले जाना चाहा। राजेश ने ऐसा करने से उसे मना किया और कहा "आज यह यहीं विश्राम करे। मुझे भी देखना है कि मैंने जो दवा दी है, उसका क्या प्रभाव हुआ है।"

दूसरे दिन नीरजा बिलकुल चंगी हो गयी और घर चली गयी। उसकी मामी ने राजेश के बारे में उसे पूरा विवरण दिया।

राजेश का बाप गाँव में रहता था और

जो थोड़ी बहुत ज़मीन थी, उसमें खेती-बाड़ी करता था । उस गाँव के तथा पड़ोस के गाँववालों को जड़ी-बूटियाँ देकर उनकी मुफ़्त चिकित्सा करता था । साल भर के पहले ही उसकी आकस्मिक मृत्यु हुई । तबसे पिता का वारिस बनकर राजेश भी ग्रामीणों की मुफ़्त चिकित्सा कर रहा है ।

राजेश की सुँदरता ने नीरजा को आकर्षित किया । उसकी सहनशक्ति तथा परोपकारी गुणों से वह बहुत ही प्रभावित हुई । उसे प्राण-दान दिया, इसलिए उसके प्रति कृतज्ञता की भावना उसके हृदय में घर कर गयी ।

एक हफ़्ते तक वह गाँव में रही । इन सब दिनों में वह राजेश से मिलती और बातें करती । उससे बातें करते हुए उसे ऐसा लगता कि मैं यहीं रह जाऊँ ओर इसी के साथ रह जाऊँ । उसने कहा "तुमने मुझे नया जीवन दिया है । तुमसे विवाह करना मेरा धर्म है, क्योंकि यह जीवन तुम्हारा है । इस पर मेरा कोई अधिकार नहीं । क्या तुम्हें मुझसे विवाह करने मे कोई एतराज़ है?"

राजेश थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोला "मैंने तुम्हारे परिवार के बारे में सब कुछ जान लिया है । तुम्हारे और मेरे स्तर में बहुत अंतर है, बड़ी गहरी खाई है । यह कैसे संभव होगा?"

उसके उत्तर से नीरजा का चेहरा फीका पड़ गया । अपने को संभालती हुई बोली "यहाँ तो स्तरों का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । मैं हृदयपूर्वक तुम्हें चाहती हूँ । तुम

केवल यह बताना कि मुझे तुम चाहते हो या नहीं? ।"

राजेश ने फ़ौरन कहा "हमारी इच्छा और अनिच्छा की बात मत करो । तुम्हारे माँ-बाप को भी अपनी स्वीकृति तो देनी होगी ना?"

"वह जिम्मेदारी मुझपर छोड़ दो" कहती हुई नीरजा वहाँ से निकली और शहर आ गयी । घर पहुँचते ही माँ-बाप को सविस्तार बताया कि गाँव में क्या हुआ है । उसने यह भी कहा "राजेश मेरा प्राणदाता है । मेरा होनेवाला पति है ।" उसके कथन में यह स्पष्ट था कि उसका निश्चय अटल है ।

इकलौती बेटी की इच्छा को ठुकरानेवाले

उसे बहुत समझाया, परंतु अपने निर्णय पर वह दृढ़ है ।"

नीरजा को लगा कि पिताजी ठीक ही तो कह रहे हैं । उसे लगा कि दोष राजेश का ही है । उसने राजेश से पूछने का निर्णय किया । दूसरे दिन वह गाँव गयी और सीधे राजेश के ही यहाँ गयी । वह दुपहर का समय था ।

भोजन समाप्त करके हाथ धोते हुए राजेश ने नीरजा को देखा और कहा "कड़ी धूप में चली आयी हो । बैठो, अभी तेरे लिए खाना बनाता हूँ ।" नीरजा ने अपने क्रोध को प्रकट ना करते हुए कहा "अपने मामा के यहाँ पेट भर खाकर ही आ रही हूँ । तुमसे ज़रुरी बातें करनी हैं ।"

"ठीक है, कहो, क्या ज़रुरी बात है" राजेश ने पूछा । नीरजा ने कटु स्वर में कहा "धर्म के बारे में लंबा भाषण देकर तुमने मेरे पिताजी को वापस भेज दिया है । बेटा होकर अपने पिता के पेशे की देखभाल करना जैसा और जितना तुम्हारा धर्म है, क्या बेटी होकर अपने पिता के व्यापार की देखभाल करना उतना ही मेरा भी धर्म नहीं; न्यायसंगत नहीं? धर्म के पालन में स्त्री हो या पुरुष, दोनों समान ही हैं ना?"

उसकी बातें सुनते हुए राजेश मुस्कुराया और बग़ल में ही थाली में रखे हुए आम के टुकड़ों को उसे देते हुए बोला "पहले इन आम के टुकड़ों को खाओ और अपना

मूर्ख माँ-बाप तो हैं नहीं वे । दूसरे ही दिन राजेश से बातें करने नीलकंठ गाँव गया ।

उसी दिन नीलकंठ घर लौटा और पुत्री तथा पत्नी से कह दिया कि यह शादी नहीं होगी ।

नीरजा पिता की यह बात सुनकर निश्चेष्ट रह गयी । पत्नी ने कारण पूछा तो नीलकंठ ने बताया "वह कहता है 'शादी के बाद मैं शहर में आकर घर जँवाई बनकर आपके यहाँ नहीं रहूँगा । पिता का वारिस बनकर उनकी वैद्यवृत्ति को बनाये रखना मेरा परम धर्म है । इस धर्म को निभाने के लिए मैं गाँव में ही रहूँगा ।' वही इसी घर का बेटा भी है और दामाद भी । क्या मेरे व्यापार की देखभाल करना उसका धर्म नहीं? मैंने

क्रोध दूर करो ।"

"बोल तो दिया है कि मैं भरपेट खाकर आयी हूँ । पहले मुझे चाहिये, मेरे सवाल का जवाब" नीरजा ने कहा ।

इतने में गली के दरवाज़े से एक भिखमंगा चिल्लाकर कह रहा था "भूख से तड़पते हुए इस पेट को एक कौर दो ओर इसे बचा लो ।"

राजेश ने तुरंत आम के टुकड़ों को उस भिखमंगे की झोली में ड़ाल दिया और लौटकर कहा "तुमने पेट भर खाया है । मेरा तोधर्म तो यह है कि आम के उन टुकड़ों को उस भूखे भिखमंगे को खिलाऊँ । यहाँ एक साम्य है । मैं यह नहीं जानता कि मेरा कहा यह साम्य किस हद तक ठीक है, पर सुनो । शहर में कितने ही व्यापारी हैं । तुम्हारे पिताजी का व्यापार बंद हो गया तो उससे नुक़सान किसी को नहीं होगा । इन ग्रामीणों की चिकित्सा मैं मुफ़्त नहीं करूँ तो उनको बहुत नष्ट होगा, कष्ट होगा । इस गाँव में तो कोई दूसरा बैद्य नहीं आयेगा, क्योंकि यहाँ की आमदनी सीमित है । स्वप्रयोजन के लिए, स्वलाभ के लिए, किये जानेवाले काम से अच्छा तो यही है कि अन्यों की सेवा करें, उनको लाभ पहुँचायें, उनका हित करें । मैं इसी को मूल धर्म समझता हूँ । इसलिए इसमें स्त्री-पुरुष के अंतर का प्रश्न ही नहीं उठता ।"

राजेश की बातों से नीरजा को लगा कि उसने आज एक जीवन-सत्य को जाना है; उसमें ज्ञानोदय हो गया है ।

वह उठ खड़ी हुई । राजेश ने आश्चर्य से पूछा "क्यों बिना कुछ बोले ही चली जा रही हो?"

"तुम्हारा धर्मोपदेश सुनने के बाद मैं जान गयी हूँ कि तुमने पिताजी से जो बातें की, उनके बारे में तर्क करना निरी मूर्खता है । घर पर तो बहुत-से काम पड़े हैं ना? आखिर हम लड़कीवाले हैं । विवाह की तैयारियाँ भी तो करनी हैं ।" कहती हुई लज्जा से उसने अपना सर झुका लिया ।

बोलता तोता

राजाराम गाँव का बड़ा किसान था । उसे इस बात का विश्वास और घमंड था कि इस गॉव में ही नहीं बल्कि अड़ोस पड़ोस के गॉवों में भी संपत्ति या बुद्धि में उससे टक्कर लेनेवाला या उससे बराबरी करनेवाला कोई है ही नहीं ।

नगर में जाकर वह जो भी नयी वस्तु देखता, उसे खरीदकर लाता और उसके बारे में ग्रामीणों से बड़ी-बड़ी बातें करता था । उसके कहने का अर्थ यह था कि इसे खरीदना मेरे लिए ही संभव हो पाया है, किसी और से यह हो ही नहीं सकता । वह दावे के साथ कहता था कि मेरे घर में जो वस्तुएँ हैं, ऐसी मूल्यवान वस्तुएँ किसी के घर में हो ही नहीं सकतीं ।

एक दिन चबूतरे के पास बैठे एक ग्रामीण ने उससे बताया "आप जानते है, हमारे गॉव के गोविंदा के घर में बोलता तोता है । क्या आप यह समाचार नहीं जानते?"

राजाराम चकित हो गोविंदा के यहाँ गया । तब गोविंदा पिछवाड़े में किसी काम पर लगा हुआ था । इसलिए राजाराम की पुकार का कोई समाधान नहीं मिला ।

राजाराम सोच में पड़ गया कि अब क्या करूँ, तब उसे ये बातें सुनायी पड़ी "आइये, अंदर पधारिये । गोविंदा घर पर ही हैं ।"

कोई आदमी दिखाई नहीं दे रहा है, फिर भी बातें सुनायी दे रही हैं तो राजाराम आश्चर्य से इधर-उधर ध्यान से देखने लगा । उसने देखा कि दीवार से सटे हुए पिंजड़े में एक तोता है । राजाराम को देखकर तोते ने फिर से वे ही बातें दुहरायीं । अब उसे मालूम हुआ कि उसका आदरपूर्वक स्वागत करनेवाला एक तोता है तो उसके आश्चर्य की सीमा ना रही ।

इतने में गोविंदा आया और राजाराम को

प्रताप वर्मा

देखते ही पूछा "आप और यहाँ? कैसे आना हुआ?"

राजाराम अपने आने का उद्देश्य बिना बताये कहने लगा "मैं खेत की तरफ़ जा रहा था तो तुम्हारे घर से एक नयी आवाज़ सुनायी पड़ी ।अंदर आकर देखा तो यह आवाज़ तोते की है । कहाँ से ले आये इसे?"

"हाल ही में पहाड़ी जाति का एक आदमी अपने कंधे पर रखे ले जा रहा था, तो पाँच रुपये देकर मैंने इसे खरीद लिया । पक्षियों को प्रशिक्षण देने में मैं अनुभव रखता हूँ । मैंने अपने अनुभव का उपयोग करके इस तोते को बोलना, गाना, इज़्ज़त से बात करना आदि सिखाया है ।"

"अच्छा, तो बात यह है । इतनी इज़्ज़त से बोलनेवाले तोते बहुत कम पाये जाते हैं । बुरा ना मानो तो यह तोता मुझे दे दो । मैं हज़ार रुपये दूँगा ।" राजाराम ने उसे लालच देते हुए कहा ।

गोविंदा ने तोते को बेचने से साफ़ इनकार कर दया । लेकिन राजाराम ने भी अपनी हार नहीं मानी । उसने गोविंदा की चापलूसी की, गिड़गिड़ाया, प्रलोभन दिया और हज़ार रुपये देकर उसे खरीद ही लिया । किन्तु एक हफ़्ता गुज़रने के पहले ही राजाराम नाराज़ी से उछलता, कूदता बड़बड़ाता गोविंदा के घर आया और बोला "मालूम नहीं, इस तोते को कौन-सा निगोड़ा रोग हो गया, जो मेरे ले जाने के चंद दिनो बाद इज़्ज़त के साथ बात ही नहीं करता । यह तो हर प्रकार के अनादर की बात करने लगा है । मुँह से जो भी शब्द निकलता है, गंदा और असभ्य है । किसी औरत को देखता है तो 'ऐ नखरेवाली' कहकर उसकी नकल उतारता है, उसकी हँसी उड़ाता है । मेरे मित्रों को 'शनिग्रह' का नाम दे दिया । रिश्तेदार आते हैं तो उनसे पूछता है क़ि तुम्हारी अर्थी कब उठेगी?" कहते हुए गोविंदा को गाली देने लगा ।

"जो हुआ, उसके लिए मुझपर गुस्सा उतारने से क्या फ़ायदा । बोलिये कि अब मैं क्या करूँ?" शांत गोविंदा ने कहा ।

"अपना तोता वापस लो और मेरे पैसे मुझे दे दे "राजाराम ने कहा ।

"महाशय, ऐसा हो ही नहीं सकता । मैंने

थोड़े ही ज़बरदस्ती आपको बेचा है । आप ही गिड़गिड़ाकर खरीदकर ले गये हैं । कहते हैं कि जिस घर के पिंजडे में तोता बसता है, वह उसी घर के माकूल बात करता है । जैसा पिंजडा, वैसी बात । आप ही कहिये, जिस तोते ने मर्यादा छोडी है, उस तोते को भला अपने यहाँ क्यों रखूँगा? अगर आपको नहीं चाहये तो उसे हवा में छोड़ दीजिये, उसे आज़ाद कर दीजिये ।'' गोविंदा ने स्पष्ट कह दिया ।

राजराम अब क्या बोले? पिंजड़े से तोते को फटाक् से निकाला और हवा में छोड़ दिया । फिर पिंजड़े को ज़मीन पर धड़ाम् से गिराया और तेज़ी से चल पड़ा ।

राजाराम के जाने के कुछ क्षणों बाद गोविंदा की पत्नी घर के अंदर से आयी और बोली ''उस निगोड़े तोते को हवा में छोड़ दिया तो वह उड़कर कहीं नहीं गया, सीधे पीछे से हमारे ही घर में घुस आया है । अब वह तो गालियों की बौछार करने लगा है । उसके मुँह से गालियों के अलावा कुछ और निकल ही नहीं रहा है । बहुत डाँटा, लेकिन जाने का नाम ही ले नहीं रहा है ।''

पत्नी की बातों पर गोविंदा ज़ोर से हँसता हुआ बोला ''तोते को बेकार गाली मत दो । वह हमारा भाग्यदेवता है । हर चौथे दिन वह जितना खायेगा, उतना बादाम खिलाना होगा । अगर नहीं खिलाया तो वह नाराज़ हो जायेगा और मुँह में जो आये, बक देगा । गालियाँ देने से, बेइज़्ज़ती करने से, अनाप शनाप बोलने से वह पीछे नहीं हटता । मैंने यह रहस्य राजाराम को बताया नहीं ।''

''ठीक हैं, पर अब तो यह बताओ कि उसका मुँह कैसे बंद करायें'' गोविंदा की पत्नी ने पूछा ।

''घर में जो बादाम है, उसे खिलाओ और फिर क्षण भर में देखना कि वह कितना मीठा बोलता है, कितना आदर दिखाता है ।'' कहते हुए चप्पल पहनकर गोविंदा गाँव के चबूतरे की तरफ़ चल पड़ा ।
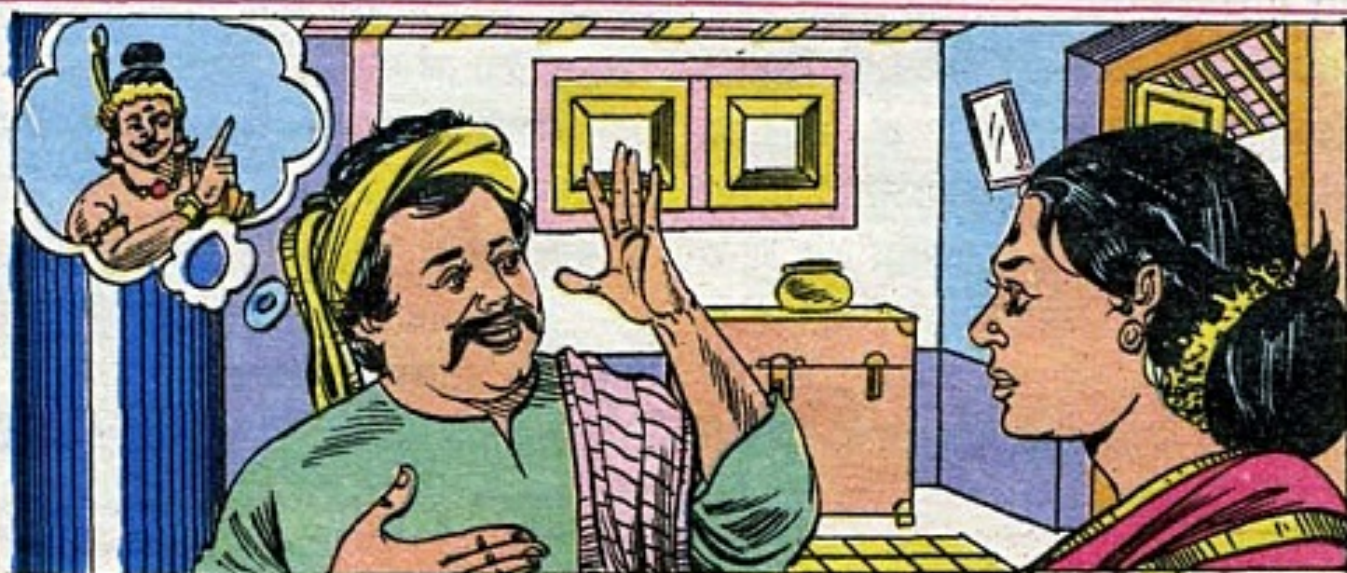
कृष्ण का जन्म यदुवंश में द्वापर युग में हुआ । भूलोक पर कंस जैसे अत्याचारियों और दुष्टों को उन्होने मार डाला । प्रजा को कष्टों से मुक्त किया । उनका बड़ा भाई बलराम यादओं का नेता बनकर राज्य का भार संभालने लगा ।

सत्यभामा के साथ चलकर कृष्ण ने नरकासुर का संहार किया । सत्यभामा ने भी युद्ध करके कृष्ण की सहायता पहुँचायी । तब से सत्यभामा यह समझकर गर्व करने लगी कि कृष्ण की अष्टमहिषियों में मेरा ही आधिपत्य है; अन्यों से मेरा स्थान सर्वश्रेष्ठ है । उसका अहंकार सीमाओं को पार कर गया था ।

एक दिन नारद देवलोक से पारिजात पुष्प ले आये और रुक्मिणी को दिया । "मैं कृष्ण की जानी-मानी धर्मपत्नी हूँ, इस अद्भुत पारिजात पुष्प तो मुझे प्राप्त होना चाहिये, मेरी सौत को देकर नारद ने मेरा अपमान कर दिया" कहती हुई सत्यभामा रूठ गयी ।

रूठी सत्यभामा को मनाने के लिए कृष्ण उसे गरुडवाहन पर देवलोक ले गये और पारिजात वृक्ष को उखाड़कर ले जाने लगे । इंद्र ने तब अपना वज्रायुध गरुड पर फेंका। किन्तु गरुड पक्षी ने सुनायास उसे अपने पंख से रोक दिया और वज्रायुध को दूर फेंका ।

तब से गरुड भी अपने बल पर अत्यंत गर्व करने लगा । सत्यभामा ने पारिजात वृक्ष को अपने गृह के पिछवाड़े में लगवाया । अब उसके गर्व की सीमा नहीं रही । क्योंकि वह

रहे थे । उन तीनों को लग रहा था कि हम अजेय हैं, सर्वशक्तिमान हैं, सर्वाधिकारी हैं । कृष्ण उन तीनों की विचार-धारा से अच्छी तरह से अवगत थे । वे इन्हें पाठ सिखाने और सत्य प्रकट करने के लिए समय की प्रतीक्षा करने लगे । परंतु अपने मनोभाव को कभी भी प्रकट होने नहीं दिया ।

एक बार गरुड नाग के शिशु को निगल जाने के लिए आगे बढ़ा, तो उस शिशु की माँ कांचनहेला नामक नागिन दौड़ी-दौड़ी आयी और बच्चे को लेकर भाग गयी । गरुड उसका पीछा करने लगा । "रक्षा करो, रक्षा करो" चिल्लाती हुई नागिन दौड़ने लगी । मार्ग में उसे नारद दिखायी पड़े और बोले "रामनाम का पठन करते हुए हनुमान की शरण में जाओ । तुम दोनों की रक्षा करने की क्षमता केवल उसी में है । हनुमान गंधमादन पर्वत पर तपस्या में लीन है । विलंब मत करो । तक्षण जाओ ।"

समझने लगी कि पारिजात को लाकर मैंने नारद और सौतन रुक्मिणी को भी नीचा दिखाया । अलावा इसके, उसमें यह विश्वास अधिक हो गया कि कृष्ण मुझे ही अधिकाधिक चाहते हैं और उनपर मेरा ही अधिकार है ।

बलराम ने भी अनेकों बलवान दुष्टों का संहार किया । उन्होने नरकासुर के निकट मित्र द्विद नामक भयंकर नरवानर को, जिसकी पूँछ नहीं थी, अपने आयुध हल से मार ड़ाला । वे भी अपने बल-पराक्रम पर गर्व करने लगे ।अपनी सफलता के कारण वे समझने लगे कि सब मेरे सम्मुख अशक्त, बलहीन व तुच्छ हैं ।

सत्यभामा, गरुड, बलराम, ये तीनों दिन-ब दिन अपनी शक्ति पर गर्व किये जा

कांचनहेला फ़ौरन गंधमादन पर्वत पर पहुँची । अपने पुत्र को हनुमान के पैरों के सम्मुख रखा और रोती हुई बोली "रक्षा करो, राम, राम ।" वहीं बेहोश हो गयी ।

हनुमान ने आँखें खोलीं और बोला "मेरे आश्रम में निर्भय होकर रहो ।" यों उसने उसे अभय दिया ।

हनुमान ने देखा कि गरुड उन्हें पकड़कर खाने को बढ़ा चला आ रहा है तो उससे कहा "हे पक्षींद्र, तुम भूखे हो तो मुझे खा जाओ ।

"नाग मेरा आहार है। तुम तो बंदर हो। तुम मेरे काम के नहीं हो" हुँकार भरते हुए हनुमान की भी परवाह ना करते हुए गरुड आश्रम में छिपे माँऔर शिशु को पकड़ने आगे बढ़ा। हनुमान ने अपनी पूँछ से गरुड के पंख बांध दिये और आकाश में ऊपर उठाकर धुमा-धुमाकर धडाम् से नीचे फेंक दिया। उस उछाल से गरुड द्वारकानगरी में बलराम के सामने घायल, नित्सहाय पक्षी की तरह जा गिरा। कांचनहेला ने हनुमान को सविनय नमस्कार किया और अपने शिशु के साथ पाताललोक में स्थित नागलोक में वासुकि के पास पहुँची।

गरुड के अपमान की घटना सुनकर बलराम बोले "गरुड, चिंतिंत मत होओ। मैं उस बंदर की खबर लेता हूँ। मैने उसकी दुर्गति नहीं की, तो मेरा नाम भी बलराम नहीं। तुम उस वानर के पास जाओ और कहो कि बलराम की यह आज्ञा है कि तुम तक्षण उनके सामने उपस्थित हो जाओ।"

गरुड ड़रते-डरते दूत की तरह हनुमान के पास पहुँचा और बलराम की आज्ञा सुनायी। हनुमान ने अनसुनी कर दी। गरुड अपने पंखों को फैलाकर, शोर मचाते हुए और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। हनुमान के पास गया भी अपनी नाक से चुभोने, किन्तु वह अपनी भूल समझ गया और चुप हो गया। वह समझ गया कि हनुमान के सामने मेरी हस्ती ही क्या है? मैं तो इसके सामने तिनके के बराबर हूँ। अच्छा यही है कि लौटूँ और हनुमान के तिरस्कार का समाचार बलराम को दूँ।
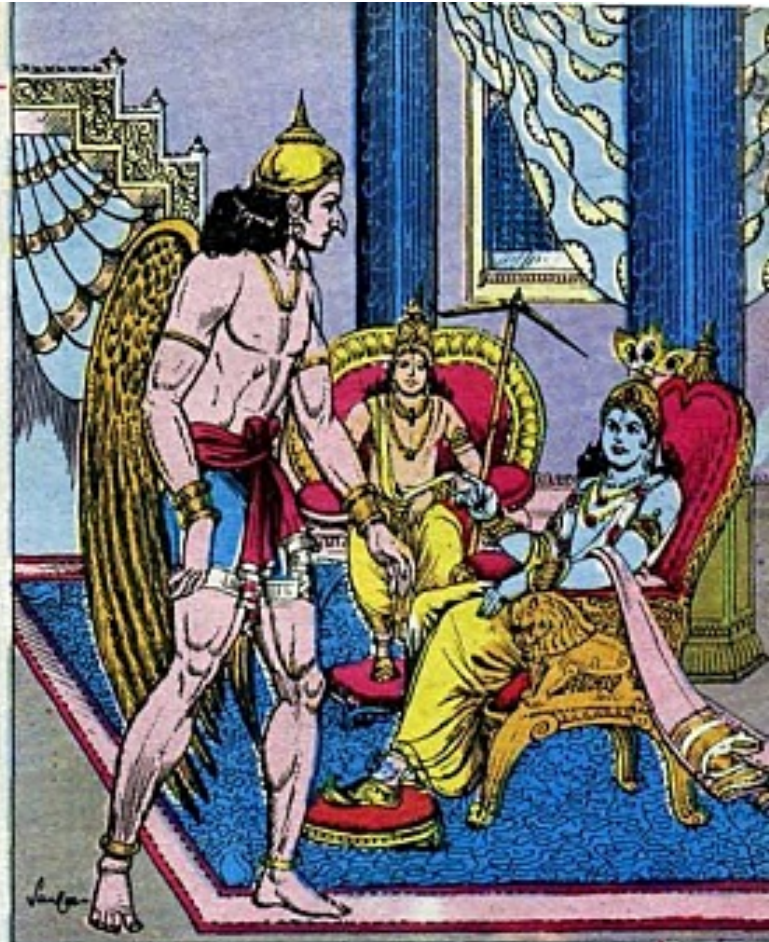
कृष्ण भी ऐसे ही अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। उस समय वे द्वारका में आये, मानों उन्हें बलराम से राजनैतिक परामर्श करना हो। उन्होने गरुड से सब कुछ सुना और उससे कहा कि जाओ, हनुमान से कहो कि राम बुला रहे हैं। गरुड पुनः गंधमादन पर्वत पहुँचा। हनुमान गरुड के साथ द्वारका आया। वह राम नाम का स्मरण करने लगा।

दर्प में चूर बलराम उठे और हनुमान के पास जाकर बोले "राम नहीं, मैं बलराम हूँ। बलरामदेवाय नमः तीन बार कहोगे तो तुम्हें क्षमा कर दूँगा।"

हनुमान बहुत ही क्रोधित हुआ । "अच्छा, तुम हो बलराम?" दाँत दिखाते हुए हनुमान उनकी हँसी उड़ाने लगा ।

बलराम ने अपना हथियार हल हनुमान पर फेंकने को उठाया । हनुमान ने पूँछ से उसे लपेटा और दूर फेंक दिया । बलराम हनुमान को मारनें उसपर टूटपड़ने ही वाले थे कि उसने बलराम को दोनों हाथों से पकड़ लिया और ऊपर उठा दिया । बलराम छटपटाने लगे और मूर्छित हो गये । इस मूर्छा में पिछला वृत्तांत सपने की तरह उनकी आँखों के सामने आने-जाने लगा ।

श्रीराम के राज्याभिषेक के समाप्त होने के दूसरे ही क्षण लक्ष्मण हँस पड़ा । सभा में सबों को लगा कि लक्ष्मण मुझे ही देखकर हँस पड़ा है । लज्जा से सबने अपना सिर झुका लिया । शांत राम ने क्रोध से लक्ष्मण पर अपनी तलवार म्यान से निकाली । हनुमान ने क्रोधी राम को रोका और लक्ष्मण से गिड़गिड़ाकर पूछा कि आखिर इस हँसी का कारण क्या है? कारण जानकर उसने सबको यों बताया ।

वनवास के समय लक्ष्मण ने चौबीसों घंटे सीताराम की देखभाल के लिए जागे रहने की ठानी थी । उसने निद्रा देवी से प्रार्थना की कि रामराज्याभिषेक के बाद ही वह आये । वह इन चौदह सालों में ना ही सोया, ना ही खाया । जो चौदह साल निद्रा का त्याग करेगा और उपवास रखेगा, उसी के हाथों में इंद्रजीत की भी मृत्यु निश्चित थी । और लक्ष्मण को यों इस लक्ष्य में भी सफलता मिली । राज्याभिषेक संपन्न होने के दूसरे ही क्षण अपने वचन के अनुसार निद्रा देवी आ गयी । निद्रा देवी के आगमन पर लक्ष्मण को हँसी आयी ।

हनुमान का कहा सब कुछ सुनकर रामने पूछा "एक दिन खाने के लिए मैंने लक्ष्मण को केला दिया था । उसका क्या हुआ?"

लक्ष्मण ने तक्षण ही अपनी जाँघ को चीरा और उसमें से केला निकाला । अपने भाई से बोला "भैय्या, आपने प्रेम से जो केला दिया, उसे रामप्रसाद समझकर सुरक्षित रखा है ।"

राम ने लक्ष्मण को आलिंगन में लिया और सभा में ऊँचे स्वर में कहा "भाई, अगले जन्म में मैं तुम्हारा छोटा भाई होकर जन्म

लूँगा और तुम्हारा ऋण चुकाऊँगा ।"

बलराम का सपना टूटा अब उन्हें स्मरण हो आया कि मैं स्वयं लक्ष्मण हूँ और इस जन्म में बलराम बनकर जन्म लिया है । तब उन्होने हनुमान से कहा "संजीव, उस काल में संजीविनी लाकर तुमने मूर्छा से मुझे जगाया, मुझे पुनः जन्म दिया । आज मूर्छित करके तुमने मुझे बता दिया कि मैं कौन हूँ और क्या हूँ? क्या तुम अपने राम को नहीं देखोगे?" कहते हुए वह हनुमान को कृष्ण के पास ले गये ।

कृष्ण ने हनुमान को देखते ही बंद मुट्ठी मे अपने हाथ उठाते हुए कहा "हमारे अग्रज बलराम की आज्ञा का तिरस्कार करोगे?" कहते हुए मुष्टि युद्ध के लिए हनुमान को ललकारा ।

कृष्णांजनेय का युद्ध बहुत समय तक चलता रहा । बड़े ही कौशल से युद्ध करनेवाले कृष्ण की प्रशंसा, हनुमान मन ही मन करने लगा और साथ ही अपनी पूरी शक्ति लगाकर लड़ने लगा । उसने अपनी संपूर्ण शक्ति समेटकर कृष्ण को एक मुक्का मारा और भूमि पर गिरा दिया । थके और हाँफते हुए कृष्ण सोच में मग्न हनुमान पर सिंह की तरह टूट पड़े और उसके वक्षस्थल को अपनी मुट्ठी से ज़ोर से मारा । तब कृष्ण का पाँव हनुमान को जा लगा ।

उस पाँव के स्पर्श से हनुमान समझ गया कि राम ही कृष्ण का अवतार लेकर अवतरित हुए हैं । अपना पातिव्रत्य प्रमाणित करने के लिए राम ने लंका में सीता को अग्नि-प्रवेश की आज्ञा दी । सीता अपने पति की कठोरता

पर आँसू बहाये जा रही थी । सीता मैय्या का यह विलाप हनुमान से देखा नहीं गया । वह राम पर क्रोधित हुआ और मुट्ठी कसकर राम को उसने युद्ध के लिए ललकारा ।

राम मुस्कुराये और बोले "हनुमान, मुझसे युद्ध करते की तुममें आसक्ति है और तुम्हारी यह इच्छा भविष्य में अवश्य ही पूर्ण होगी ।"

अब हनुमान को उस सन्नितेश का स्मरण आया । हनुमान ने हाथ उठाकर प्रणाम करते हुए कहा" हे राम, राम के रूप में दर्शन देकर मुझे कृतार्थ करो ।"

"हनुमान, तनिक ठहरो । लक्ष्मण तो यहीं है । सीता को तो अभी आना है?" कहकर कृष्ण ने सत्यभामा को वहाँ आने का समाचार भेजा ।

सत्यभामा इस गर्व में चूर थी कि जन्म-जन्मों से मैं ही कृष्ण की धर्मपत्नी हूँ । मेरे स्थान की पूर्ति कोई और कर ही नहीं सकती । कृष्ण के भेजे संदेश को पाकर उसने अपने को विविध अलंकारों से अलंकृत किया । पारिजात पुष्पों से अपने बालों को सजाया और बन ठनकर कृष्ण के पार्श्व में आ खड़ी हो गयी । उसके हाव-भावों से ही लग रहा था कि वह इस स्थान के लिए अपने को एक मात्र योग्य समझ रही है ।

हनुमान ने सत्यभामा को देखते ही कहा "तुम चंद्रसेना हो ना? स्मरण है? राम ने उस अवतार के समय वचन दिया था कि कृष्णावतार में आठ पत्नियों में से तुम भी एक पत्नी होगी । लगता है, उन्होने अपना बचन निभाया । चंद्रसेना, तुम धन्य हो ।"

हनुमान की बातों से सत्यभामा को रामावतार की बातें याद आयीं । अब उसने अपना गर्व त्यागा और रुक्मिणी से बोली "दीदी, तुम सीता हो, अपने इस हनुमान को आशीर्वाद दो ।" विनय से उसने पूछा ।

रुक्मिणी ने सीता का रूप धारण किया । कृष्ण ने कोदंडराम के रूप में प्रत्यक्ष होकर हनुमान को आशीर्वाद दिया । बलराम लक्ष्मण बनकर राम के पार्श्व में खड़े हो गये । हनुमान राम के पैर तदेक दृष्टि से देखता रहा और भक्ति से हाथ जोड़कर ब्रह्मानंद में डूब गया ।

रामावतार के रूप का उपसंहार करके
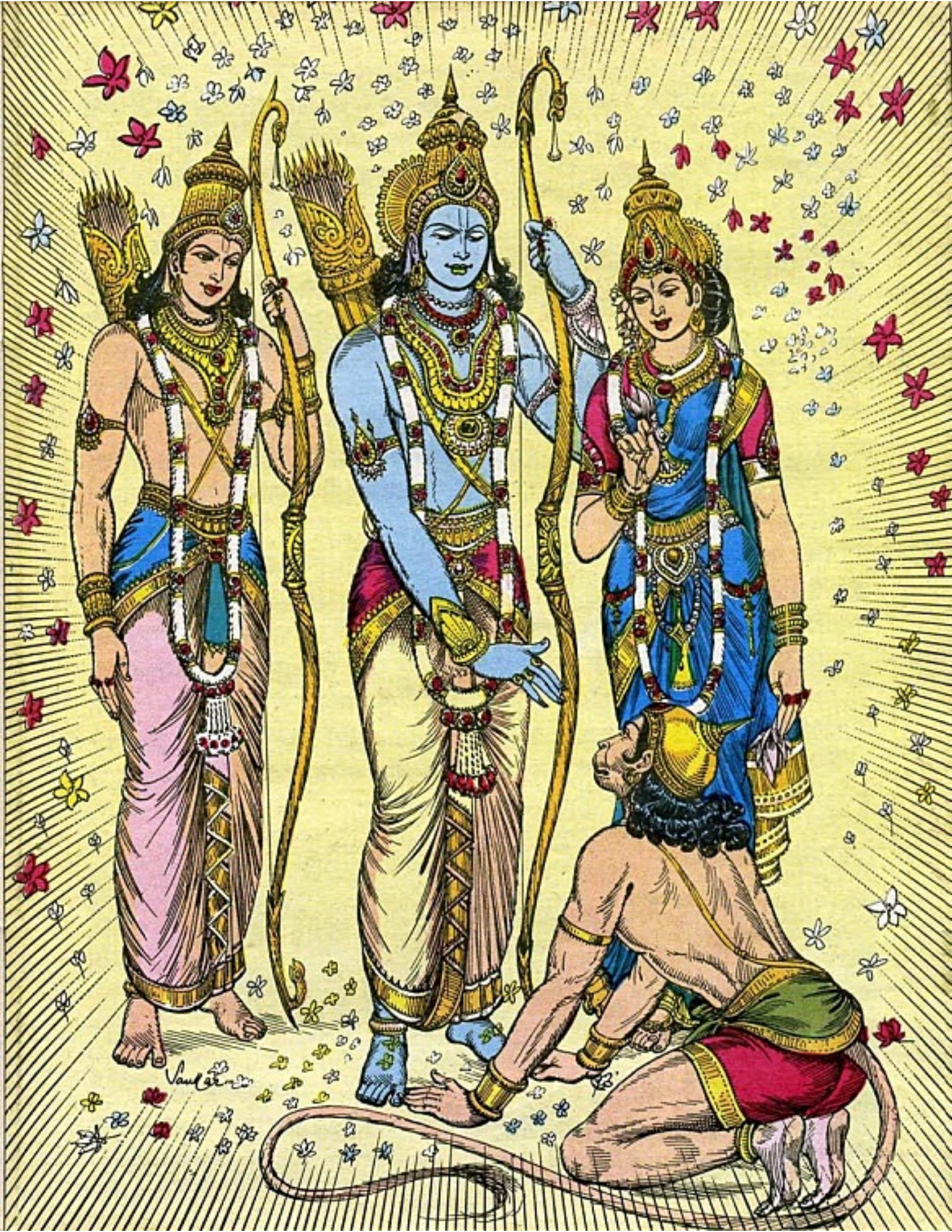
कृष्ण ने भक्ति में मग्न हनुमान की पीठ थपथपायी और कहा "हनुमान, तुम जाओ और हिमालय के नीचे के कदलीवनों में रहो । वहाँ तुम्हारा भ्राता वायुकुमार भीम आयेगा । उसे गदा युद्ध और मल्लयुद्ध की सूक्ष्मताएँ बता और सिखा ।"

सत्यभामा हनुमान के सामने आयी और बोली "उस दिन राम को मेरे पास तुम्ही ले आये थे । आज के इस महाभाग्य के कारक तुम्हीं हो । मैं हृदयपूर्वक अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर रही हूँ ।"

हनुमान ने उसे फिर से प्रणाम करते हुए कहा "देवी, तुम सत्यभामा हो । इसका अर्थ यह हुआ कि भगवान सदा सत्य के अधीन होते हैं । कृष्ण ने तुमसे विवाह किया है, तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति की है और सत्यापति का नाम पाया है । तुम बहुत ही धन्य स्त्री हो । मेरे लिए सीता के समान हो ।"

रुक्मिणी और कृष्ण को प्रणाम करके हनुमान निकलने ही वाला था कि बलराम ने हनुमान को बड़े प्यार से गले लगाया और कहा "संजीवराय, तुम्हारे ही कारण मैं अपने को जान पाया हूँ । तुम्हें मेरे धन्यवाद ।"

गरुड ने हनुमान से हाथ जोड़कर कहा "वीर हनुमान, क्षीरसागर मे अपने सन्निधान में मेरे साथ तुम भी रहोगे । महाविष्णु ने मुझसे यह बात कही थी और वह बात अब याद आ रही है ।" कहते हुए कदलीवन तक वह उसके साथ गया ।

कदलीवन मैं ऊँचे ऊँचे केलों के पेड़ थे, तरह-तरह के फलों के बृक्षों से वह मनोमुग्धकारी लग रहा था । हिमशिखरों से फिसलकर नीचे गिनेवाले प्रपातों का जल चाँदी की तरह चमक रहा था ।

हनुमान ने कदलीवन में प्रवेश किया । बूढ़े बंदर की तरह केलों के पेड़ों के पास पैर फैलाकर बैठ गया । उसकी पूँछ सीधी थी और रास्ते में बाधक बनी हुई थी । गदा हाथ ही के निकट रखी हुई थी ।

हनुमान आँखें बंदकर राम का ध्यान करने लगा और भक्ति से राम नाम के जप में लीन हो गया ।

रोग

कुबेरपुर का नागराज बहुत ही बड़ा धनवान था । अपने बाद की कितनी ही पीढ़ियों के लिए भी उसकी संपन्ति पर्याप्त होगी, पर क्या लाभ? उसकी तंदुरुस्ती अच्छी नहीं थी । बड़े से बड़े वैद्यों की भी समझ में नहीं आ पाया कि आखिर इस अनारोग्य का क्या कारण है? उन्होने कह भी दिया कि जितनी दवाओं से हम परिचित हैं, उतनी दवाओं का हमने उपयोग किया है । आपकी बीमारी का इलाज करना हमसे हो ही नहीं सकता ।

ठीक उसी समय योगानंद नामक एक साधु कुबेरपुर आये । वे शहर के बाहर के आश्रम में निवास करने लगे । उन्होने योगविद्याओं के द्वारा अद्‌भुत शक्तियाँ प्राप्त की हैं और वे दीर्ध रोगों की भी चिकित्सा करने की क्षमता रखते हैं । यह नागराज को मालूम हुआ । वह अपनी पत्नी समेत आश्रम में गया और साधु को अपनी स्थिति बतायी ।

योगानंद ने ध्यान से सब कुछ सुनने के बाद पुछा "क्या इस नगर में आपके कोई शत्रु हैं?"

नागराज को आश्चर्य हुआ कि ये साधु भी कैसे साधु हैं? मैं अपने रोग के बारे में इन्हें बता रहा हूँ और ये पूछ रहे हैं कि शहर में क्या तुम्हारा कोई शत्रु है? फिर भी जवाब देना अपना कर्तव्य समझकर उसने कहा "क्यों नहीं स्वामी । नगर के सब लोग मेरे शत्रु हैं । मेरी संपत्ति को देखकर सब मुझसे ईर्ष्या करते हैं । आपका अभिप्राय यह तो नहीं कि उनमें से किसी ने मुझपर काला जादू करवाया हो ।"

नागराज की पत्नी को लगा कि साधु ने जो प्रश्न पूछा, उसका उत्तर दिये बिना उसका पति व्यर्थ की बातें कर रहा है तो उसने कहा "हाल में इनमें जल्दबाजी बहुत बढ़

गयी है स्वामी । इन्हें मालूम नहीं होता कि किससे कैसी बातें करनी है । आप मुझसे पूछिये, पूरा विवरण मैं दूँगी ।''

साधु ने कहा ''कोई बात नहीं । इन्हें ही बताने दीजिये । अपने अड़ोस-पड़ोस के लोगों के बारे में तनिक बताइये नागराज जी ।''

''क्या कहूँ । सब के सब दुष्ट हैं । कुछ समय पहले तक कुबेरपुर में मेरा ही महल सबसे बड़ा महल था । किन्तु हाल ही में बराहसेठ नामक कपड़ों के व्यापारी ने मेरे महल से भी बड़ा महल बनवाया है और मज़े से रह रहा है । उसके आनंद का क्या कहूँ । जब देखो, मस्ती में झूमता रहता है ।'' नागराज ने जलते हुए कहा ।

''आपके क्या कोई निकट के रिश्तेदार है?'' साधु ने पूछा । ''उनकी बातें ना करें तो अच्छा है । स्वामी, उनका नाम सुनते है मेरा कलेजा जलने लगता है । पास ही के गाँव में मेरे बंधु हैं । वे सदा इसी ताक़ में रहते हैं कि हम पति-पत्नी कब मर जाएँगे और जायदाद कब ड़ड़प लें । मेरा मन तो तभी शांत होगा जब कि वे किसी भूकंप अथवा बाढ़ में बहकर मर जाएँ'' नागराज ने क्रोध से कहा ।

साधु ने नागराज से कोई और प्रश्न नहीं किया । थोड़ी देर तक आँख बंद कर चुप रह गये और फिर बोले ''तुम दोनों कुछ समय तक तीर्थयात्राएँ करो । तब तक तुम्हारा रोग शायद ठीक हो जाए ।''

नागराज दंपति काशी, रामेश्वर, आदि पुण्यक्षेत्रों का संदर्शन करके छह महीनों के बाद कुबेरपुर लौटे । उन छे महीनों में उसकी तंदुरुस्ती बिलकुल ठीक रही । उसने महसूस ही नहीं किया कि मैं किसी रोग से पीड़ित हूँ । साधु योगानंद भी दक्षिण भारत की यात्रा करने निकले ।

लौटे महीना भी नहीं हुआ, नागराज फिर से अस्वस्थ हो गया । वह साधु योगानंद के आगमन की प्रतीक्षा में था । इसके एक महीने के बाद साधु शहर में आये । उसी दिन नागराज अपनी पत्नी को लेकर उनके दर्शनार्थ गया ।

''तीर्थयात्रा कैसी रही? अब आपका स्वास्थ्य कैसा है?'' साधु ने यों कुशलमंगल पूछा ।

"स्वामी, क्या बताऊँ? जब तक यात्रा करता रहा तब तक कोई बीमारी नहीं रही । मज़े से दिन कटे । कोई शिकायत नहीं थी । नगर क्या लौटा, जिन रोगों को मुझसे दूर भागा समझ रहा था, सब के सब भूतों की तरह फिर से मुझपर हावी हो गये और मुझे पीड़ा पहुँचा रहे हैं । आपकी दी हुई दवाएँ ख़तम हो गयीं । अब इस बार साल भर के लिए दवाएँ देंगे तो बड़ा पुण्य होगा ।" नागराज ने गिड़गिड़ाते हुए कहा ।

"वे दवाएं अपने ही घर में बना सकते हो । दवा बनाने की पद्धति भी आपकी धर्मपत्नी को समझा दूँगा । आप थोड़ी देर तक ध्यान मंदिर में जाकर बैठे रहिये" साधु ने कहा ।

नागराज के जाते ही साधु ने उसकी धर्मपत्नी से कहा "तुम्हारे पति को कोई रोग नहीं है । चूँकि नगर में वह सबसेअधिक धनवान है, इसलिए संदेह है कि सब के सब मेरे शत्रु हैं । इससे उन्हें भय होता रहता है और यह भय हर क्षण पीड़ा पहुँचाता रहता है । इसी नगर में हाल ही में आकर धनवान बने बराह सेठ के प्रतिद्वंदी हो जाने का भय है । उसपर ईर्ष्या भी इतनी बढ़ गयी है कि तुम्हारे पति के मन को शांति नहीं । भयंकर सपने की तरह बराह सेठ उनका पीछा कर रहा है । सोते और जागते तुम्हारा पति उसी के बारे में सोचते रहते हैं । सगे संबंधियों से असीम देष करने लगे हैं, क्योंकि इन्हें भय है कि वे कहीं उनकी संपत्ति हड़प ना ले । संदेह, ईर्ष्या, देष, भय रोगों के मूल कारक हैं । जब तक ये इनसे

छुटकारा प्राप्त नहीं करते, तब तक वे रोगों से मुक्त नहीं हो पायेंगे; दवाओं का कोई प्रभाव नहीं होगा ।"

"स्वामी, यह सब कुछ आप उनसे बता सकते थे । उनको अलग भेजकर मुझसे बताने का कष्ट क्यों कर रहे हैं?" नागराज की धर्मपत्नी ने अपना संदेह व्यक्त किया ।

साधु मुस्कुराते हुए बोले "दूसरा कोई व्यक्ति सामनेवाले की त्रुटियों पर टीका-टिप्पणी करे, या उँगली उठाकर दिखाये तो कोई भी आसानी से वह सहन नहीं कर पाता । मुख्यतया, तुम्हारे पति जैसे संदेहशील व्यक्ति तो विश्वास ही नहीं करेंगे । इसीलिए मैं तुम्हें समझा रहा हूँ ।"

"क्षमा कीजिये स्वामी । आप कुछ दवाओं की बात कर रहे थे, बताइये" विनय से नागराज की पत्नी ने पूछा ।

"दवाओं के बारे में? हाँ, हाँ, याद आया । मैने तुम्हारे पति को दवा की जो पुड़ियाँ दीं, उसमें शक्कर और नमक का बस, चूर्ण था । मुझपर तुम लोगों का विश्वास बना रहे, इसके लिए मैने ऐसा किया । तीर्थयात्रा के दरम्यान तुम्हारे पति ईर्ष्या और द्वेष जैसे अस्वस्थ भावों से दूर रहे । इसीलिए उस अवधि में उनका स्वास्थ्य सही रहा । शहर वापस आते ही उन अस्वस्थ रोगों के प्रभाव और दबाव में आ गये तो फिर से रोग उन्हें अपने शिकंजे में कसने लग गये ।" साधुने नागराज की पत्नी को उसके संदेहों का समाधान दिया ।

नागराज की पत्नी ने बड़ी दीनता से पूछा "बोलिये, अब मैं क्या करूँ?" साधु थोड़ी देर गंभीरता से सोचने के बाद बोले "यह तो स्पष्ट है कि तुम्हारे पति अनावश्यक ही वराह सेठ से ईर्ष्या कर रहे हैं, अपने सगे संबंधियों से द्वेष कर रहे हैं, उनपर निरर्थक संदेह कर रहे हैं । तुम्हें उनके इस ईर्ष्या और द्वेष को हटाने के लिए होशियारी से काम लेना होगा ।"

घर लौटने के बाद नागराज की पत्नी ने पति से कहा "अजी, नगर में सबका यही कहना है कि वराह सेठ बड़े सज्जन हैं और दयावान भी । परंतु जब देखो, आप उन्हें गालियाँ देते रहते हैं । क्या आपका विचार है कि उनमें अच्छाई है ही नहीं? ज़रा बताइये

तो सही, उस वराह सेठ ने आपका क्या बिगाड़ा है? आपके प्रति उन्होने ऐसा क्या अन्याय कर दिया, जिसके कारण आप उन्हें अपना शत्रु मान रहे हैं ।"

पत्नी के प्रश्न का समाधान नागराज तुरंत दे नहीं पाया । थोड़ी देर बार उसने कहा "वह और मेरे साथ अन्याय? ऐसा तो कुछ है ही नहीं । जब इस नगर में आया था तब पहले पहल वह मुझी से मिला । अपना परिचय स्वयं दिया और कहा कि मैं कपड़ों के व्यायार का श्रीगणेश करने वाला हूँ, आशीर्वाद दीजिये । अब भी कभी गली में मिलना हुआ तो विनयपूर्वक नमस्कार करता है और कहता है कि आपकी दया से व्यापार अच्छा चल रहा है ।"

"तब आपने साधु से क्यों कहा कि वराह सेठ से मुझे द्वेष है ।अच्छी तरह सोचिये तो सही । आप ही जान जाएँगे कि वह आपसे द्वेष नहीं करता ।" पत्नी ने उसे समझाने का प्रयत्न किया ।

पत्नी की बातों पर नागराज ने सर हिलाया और कहा "हाँ, तुम्हारा कहना सच लग रहा है ।"

नागराज की पत्नी ने तब एक पुड़िया खोली और साधु की दी हुई दवा कहकर उसे पानी में डालकर पीने को कहा । फिर उसने कहा "वराह सेठ की तरह अपने सगे संबंधियों पर भी आपने द्वेष बढ़ा लिया है । कल आप ही सोचकर बताइये कि उनमें निहित सद्‌गुण क्या हैं । अभी आप सो जाइये, और इसी के बारे में सोचिये ।"

यों नागराज की पत्नी ने, साधु की सलाह के मुताबिक अपने पति को समझाया । उसमें विश्वास पैदा किया कि उसका कोई शत्रु नहीं । द्वेष, ईर्ष्या, धृणा आदि दुर्गुणों के कारण ही वे बीमार रहे हैं । अब नागराज भी अपनी त्रुटियों को समझ गया । उसमें अब द्वेष और ईर्ष्या के बदले प्रेम, विश्वास आदि सद्‌गुणों ने स्थान कर लिया । जिन दुर्गुणों से वह पीड़ित था, उन्हें दूर भगाने में उसकी धर्मपत्नी सफल हो गयी ।

'चन्दामामा' की ख़बरें

संगीत की शक्ति

समाचार है कि खेतों के बीच में संगीत सुनाने से फ़सल का उत्पादन अधिक हुआ है । यह भी बताया जा रहा है कि संगीत सुनाने से पशुओं ने दूध अधिक दिया है । दफ़्तरों में काम करनेवालों के सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए संगीत सुनाया जा रहा है । कानों में 'वाकमान' लगाकर पढ़नेवाले और गणित करनेवालें भी पाये गये हैं । हाल ही में यह संगीत 'आपरेशन थियोटरों' पर भी हावी हो गया है । जर्मनी के मोनस्टन विश्वविद्यालय के अस्पताल में डाक्टर संगीत सुनते हुए दिल की शस्त्रचिकित्सा कर रहे हैं । डाक्टरों के उद्वेग को कम करके एकाग्रता से आपरेशन के काम में संगीत उपयोगी पाया गया है । लगता है कि आगे बेसुध करके शस्त्र चिकित्सा करने की आवश्यकता नहीं होगी ।

उड़नेवाली तश्तरियाँ

अंतरिक्ष से उड़नेवाली तश्तरियों को लेकर हाल ही में काफ़ी संशोधन हो रहे हैं । अमेरीका के रिचर्ड थामसन कुछ समय से उड़नेवाली तश्तरियों के बारे में विवरण जमा कर रहे हैं । ये तश्तरियाँ पल भर में दिखती हैं, और पल भर में गायब हो जाती हैं, अतः तत्संबंधी विवरण प्राप्त करना कष्टतर हो रहा है । १९७६ में इरान की राजधानी टेहरान में उड़नेवाली एक तश्तरी दिखायी पड़ी तो एक अमेरिकी जेट विमान चालक ने उसका पीछा किया । बताया जाता है कि मार्ग के मध्य वायुयान की 'एलक्ट्रानिक पद्धति' खराब हो गयी । जब उसने अपने वायुयान का रुख बदला तो फिर वह 'एलक्ट्रानिक पद्धति' काम करने लगी । बताया गया है कि प्रकाशवान उस उड़नेवाली तश्तरी का एक पहिया भूमि पर गिर गया ।जब कि इस प्रकार की बातें बतायी जा रही हैं, तब यह भी थामसन बताते हैं कि भारत के पुराणों में वर्णित विमानों से इन तश्तरियों का बड़ा साम्य है । उन्होने कहा कि कृष्ण ने जिस अग्निचक्र का उपयोग किया, वह कुछ इसी प्रकार का साधन है ।
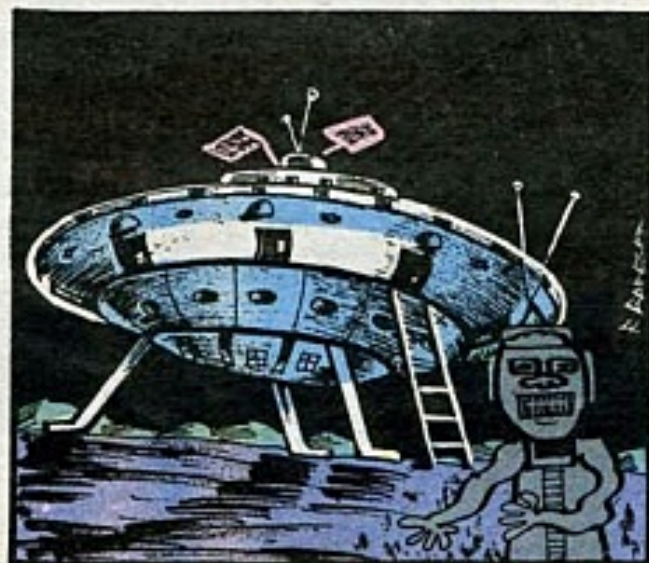
विचित्र वेणु

आनंद ग़रीब बाप का बेटा था । वह गुणों से बहुत ही दुर्बल था । अब्वल दर्जे का सुस्त था । उसके पिता ने बहुत समय तक परिश्रम करके उसका बोझ उठाया, उसका पालन-पोषण किया । पर कब तक? अब वे दाने-दाने के लिए तरसने लगे । इसलिए उसके बाप ने सोचा कि आनंद को कहीं काम पर लगा दूँ । वह आनंद को लेकर नौकरी की खोज में चल पड़ा ।

आनंद को काम पर लेने कोई सहमत नहीं हुआ । आखिर आनंद को उसके पिता ग्रामाधिकारी के पास ले गया । सच कहा जाए तो ग्रामाधिकारी बड़े ही कठोर स्वभाव का था । उसके पास काम करने कोई नहीं आता । आ भी जाएँ तो टिकते नहीं थे । कहीं नहीं तो ग्रामाधिकारी के पास ही सही, समझकर आनंद को उसी के यहाँ नौकरी पर रख दिया । कुछ ना मिले, पर खाने को तो कुछ ना कुछ अवश्य मिलेगा ही । वेतन, कपड़े आदि के बारे में पिता से बिना कुछ कहे ही ग्रामाधिकारी ने अपने यहाँ आनंद को नौकरी पर रख लिया ।

तीन साल काम करने के बाद आनंद ने नौकरी छोड़ने की इच्छा प्रकट की ।

ग्रामाधिकारी ने उसके हाथों में चाँदी की तीन अशर्फ़ियाँ रखीं और कहा "सालाना एक अशर्फ़ी के हिसाब से दी है । तुमपर दया करके ही मैंने तुम्हें नौकरी पर रख लिया था । इन तीन सालों में ना ही तुमने कुछ सीखा है और ना ही भविष्य में सीख पाओगे । ये जो अशर्फ़ियाँ तुम्हें दे रहा हूँ, वह भी तुम पर दया करके दे रहा हूँ । अब अपना रास्ता नापो ।"

आनंद को मालूम था कि ग्रामाधिकारी सरासर झूठ बोल रहा है । इन तीन सालों से उसने उससे खूब मेहनत करायी । कभी

भी विश्राम करने नहीं दिया । सोचा, जाते समय अवश्य ही यजमान उसके परिश्रम का फल देंगे । लेकिन यजमान की बातों से वह बहुत निराश हुआ ।

'तीन सालों के पहले जिन कपड़ों को पहनकर आया था, उन्हीं को पहनकर जाऊँ'' आनंद ने पूछा ।

''कपड़े देने की कोई बात नहीं हुई । जो रकम दी है, वही ज़्यादा है'' ग्रामाधिकारी ने कहा ।

आनंद उन तीन अशर्फियों को लेकर शहर चला । शहर जाना हो तो पहाड़ों की गुफाओं में से होते हुए जाना पड़ता है । थोड़ी दूर जाने के बाद वहाँ उसे एक भिखमंगा अकस्मात दिखायी पड़ा ।

वह भिखमंगा बहुत ही लंबे क़द का था ।उसे देखकर भयभीत आनंद चिल्ला पड़ा ।

भिखमंगे ने उससे कहा ''मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूँगा । मुझे केवल एक अशर्फी दो ।''

'मेरे पास तो केवल तीन ही अशर्फ़ियाँ हैं । इनसे मुझे कपड़े खरीदने हैं'' आनंद ने कहा ।

''तेरे पास तीन अशर्फियाँ हैं । एक मुझे दो और दो तुम रख लो । मेरे कपड़े तेरे कपड़ों से भी बदतर हैं ।'' भिखमंगे ने कहा ।

कोई और चारा नहीं था । आनंद ने उसे एक अशर्फ़ी ही और आगे चल पड़ा ।

कुछ और दूर जाने के बाद एक मोड़ पर एक और भिखमंगा सामने से आया । वह पहले भिखमंगे से भी ऊँचा था ।इसने भी पहले भिखारी की तरह उससे एक अशर्फ़ीली ।दर्रे के अंत पर आनंद की मुलाक़ात तीसरे भिखमंगे से हुई । वह पहले के दोनों भिखमंगों से भी ज़्यादा ऊँचा था ।जब तक आनंद ने उसे तीसरी अशर्फ़ी नहीं दी, तब तक उसने उसे नहीं छोड़ा । भिखमंगे की दीन स्थिति को देखकर आनंद का दिल भी पिघल गया और उसने दे ही दी ।

अशर्फ़ी लेकर भिखमंगा बोला ''तुमने अपनी तीनों अशर्फ़ियाँ तीन भिखमंगों को दीं । एक एक अशर्फी के लिए एक एक वर माँगो । बोलो, सब से अधिक तुम्हें क्या पसंद है?''

आनंद थोड़ी देर सोचने के बाद बोला

"सुना है कि कृष्ण जब वेणु बजाते थे, तब गोपी और गोपिकाएँ तन्मय होकर नाचते थे । मुझे ऐसा अद्‌भुत वेणु चाहिये, जिसे बजाने पर तन्मय होकर लोग नाचें ।"

"इस बार उससे भी अधिक अच्छा वर माँग लो" भिखमंगे ने कहा ।

"चाहे कितनी भी दूरी हो, सही निशान पर मारनेवाला गुलेल चाहिये ।" आनंद ने कहा ।

"मैं जिससे जो माँगूं, उन्हें फौरन उसे मुझे देना होगा । आज तक हर एक ने मुझसे केवल लिया है, मुझे कुछ नहीं दिया ।" भिखारी के ज़ोर देने पर आनंद ने यों तीसरा वर भी माँग लिया ।

"इस बार तुम्हारी माँग बाक़ी दो से बेहतर है । तुम्हारी तीनों इच्छाएँ पूर्ण होंगी" कहता हुआ भिखारी चला गया ।

आनंद पहाड़ों में ही एक जगह पर सो गया । उठकर देखा तो उसके बग़ल में एक वेणु था ।एक गुलेल था । उन्हें लेकर खुशी-खुशी शहर पहुँचा ।

शहर में दुकान में गया और उसे जो कपड़े चाहिये, खरीद लिया । किसी से घोड़ा माँगा और ले लिया । उसके पूछने की देरी है, कंजूस भी उसे जो चाहिये, दे देते थे । घोड़े पर चढ़कर वह अपने गाँव लौटा ।

ग्रामाधिकारी उसे दिखायी पड़ा तो घोड़ा रोककर आनंद ने कहा "प्रणाम मालिक, प्रणाम ।"

ग्रामाधिकारी उसे देखकर चकित रह गया और बोला "अरे, इतने कम समय में इतने बड़े आदमी बन गये?"
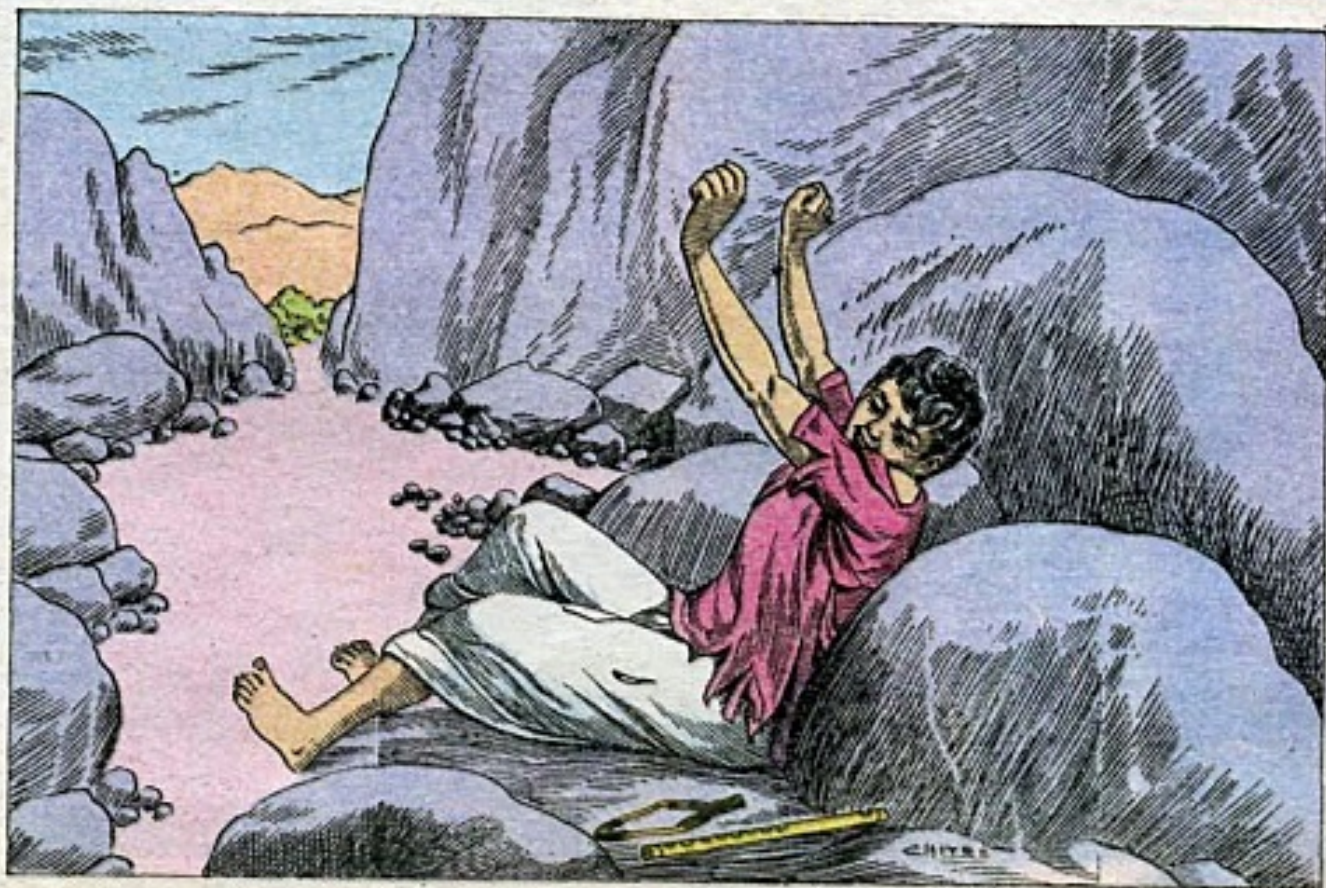
"सब भाग्य का खेल है।" आनंद ने कहा।

"हाथ में वेणु भी है। काम छोड़कर संगीत विद्वान बनने का इरादा है क्या?" व्यंग्य से ग्रामाधिकारी ने पूछा।

"बनना ही है तो बन जाने में कितनी देर लगेगी। यह गुलेल इससे भी महत्वपूर्ण है। दूर की वस्तु को भी निशाना बनाकर मार सकता हूँ। दूर ताड़ के उस पेड़ पर जो पक्षी है, उसे भी मार पाऊँगा।" आनंद ने खुशी खुशी कहा।

"तेरा सर" ग्रामाधिकारी ने उसकी हँसी उड़ायी। आनंद ने कहा "शर्त लगाकर तो देखिये।"

"तुम उस पक्षी को मारोगे तो मैं अपना पूरा खेत तुम्हारे नाम कर दूँगा। मेरे पास जो रक़म है, पूरी की पूरी तुम्हें दे दूँगा। थोड़े ही यह काम तुमसे होगा। चल, चल, रास्ता नापो" ग्रामाधिकारी ने कहा।

आनंद ने पक्षी को गुलेल से मारा। वह नीचे गिरा। ताड़ के पड़ के पास जो कँटीली झाड़ियाँ थीं, उनमें वह जा गिरा। ग्रामाधिकारी को वादे के अनुसार उस पक्षी को ले आने कँटीली झाड़ियों में जाना पड़ा। काँटे चुभ रहे थे, फिर भी ग्रामाधिकारी ने बड़ी मुश्किल से उस पक्षी को बाहर निकाला और अपने हाथ में लिया। आनंद ने तक्षण ही वेणु बजाया। ग्रामाधिकारी ने नाचना शुरू कर दिया।

थोड़ी ही देर में ग्रामाधिकारी का सारा बदन काँटों से चुभ गया और खून बहने लगा। सारे कपड़े फट गये। शरीर पर अब केवल चीथड़ियाँ ही रह गयीं। आनंद ने अब वेणु बजाना बंद कर दिया और ग्रामाधिकारी के पास आकर बोला "मैंने जब आपके पास नौकरी छोड़ दी, तब मेरे कपड़ों की भी यही हालत थी।"

ग्रामाधिकारी बाजी हार गया। इसलिए भारी रक़म आनंद को देनी पड़ी। आनंद ने वह रक़म ली और शहर पहुँचकर आराम से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने लगा।

(पच्चीस साल पहले 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी)

प्रकृति: रूप अनेक

बिना पंख चलाये उड़नेवाला पक्षी

साधारणतया कोई भी पक्षी उड़ते समय अपने पंखों को हिलाते हुए जाता रहता है । परंतु 'अलब्राटोस' नामक बतख जैसा पक्षी शून्य में बिना पंख चलाये ही उड़ता रहता है ।

वह एक या दो घंटे नहीं बल्कि वह चाहे तो लगातार छह दिनों तक उड़ते हुए ही रह सकता है । शायद आपको संदेह होगा कि ये छह दिन वह सोता ही नहीं होगा । परंतु ऐसी कोई बात नहीं । वह सोता भी है । शून्य में उड़ते हुए वह मज़े से सोता रहता है ।

फूल कैसे सोते हैं?

फूलों का सोना क्या आपने कभी देखा है? कम से कम यह तो देखा होगा कि कुछ प्रकार के फूल अपनी पंखुडियों को बंद करके सो जाते हैं । किन्तु आप इसे नींद नहीं कह सकते । क्योंकि कुछ फूल बहुत ही कोमल होते हैं । वातावरण में होनेवाले परिवर्तनों से फूलों की रक्षा के लिए प्रकृति साधन जुटाती है । रातों में उष्णता कम हो जाने पर अथवा वातावरण ठंड़ा पड़ जाने पर जब अंधेरा छा जाता है तब कुछ फूलों को देखकर हमें लगता है कि है कि वे निद्रावस्था में हैं । कुछ पुष्प दिन में जब अधिकाधिक गर्मी होती है, तब उस गर्मी से अपनी रक्षा करने के लिए सिकुड़ जाते हैं ।

बदलनेवाले रेतीले टीले

रेगिस्तान के रेतीले टीले आज होते हैं तो कल नहीं होते । कल दीखनेवाले परसों नहीं होते । रेगिस्तान में तेज़ी से चलनेवाली हवा के कारण ऐसा होता है । उस हवा के कारण एक ही पल में ये टीले अपने आकार को बदलते रहते हैं । इसलिए हम कहाँ और किस तरफ़ जा रहे हैं, उस जगह की सही पहचान रखना कठिन काम है ।

Say "Hello" to text books and friends
'Cause School days are here again
Have a great year and all the best
From Wobbit, Coon and the rest!

It's time to go back to school again. Time for text books. Time for games. Time to meet old friends. And make new ones. Time to start studying again. Because there's so much to learn about the world around you.

From all of us here at Chandamama, have a great year in school. And remember to tell us what you've learnt everyday, when you come home from school !

SUPER RUBBER

THE
CHANDAMAMA
COLLECTION

ARTIG1246

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

G. Srinivasa Murthy

Purushottam Vagga

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★१० अप्रैल '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियाँ को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

फरवरी १९९४, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : हाथी की यह काया!

दूसरा फोटो : छाया की यह माया!!

प्रेषक : मनोज सैयल C/o Sri VINOD KUMAR SYEL, 2566/HIG, PHASE-2, URBAN ESTATE, PUGRI ROAD, LUDHIANA-P.O, PUNJAB.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Go ahead Try-Me!

I remember the day we moved into our new home.

The boys and girls on the block looked like they were having 'hazaar' fun. But no, they didn't look too interested in me.

How do you walk up to a new gang and make them your pals? Think...Think. So I just chuck a Try-Me in my mouth...walk my best tough-guy-walk and offer them a handful of Try-Me - "Go ahead, Try Me!" Yeah. I made five new best pals that day.

Parry's Try-Me!

Parry's

Try-Me!

The Bold New Taste

HTA-8507